श्री गणेशाय नमः

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

Editors:

Pt. Narayan Bhatt (Shastri)

Pt. Jagdish Maharaj (JP)

Publisher

Hindu Heritage Society Inc.

ABN: 60486249887. Y:2943504

P. O. Box 85, Pendle Hill NSW 2145

www.hinduheritage.org.au

श्री सत्य नारायण व्रत कथा ॥

सरल पूजन विधि सहित। हिन्दी, English तथा पद्य में ॥

देश के मूर्धन्य धर्म उपदेशकों द्वारा रचित रचनाओं का एक समन्वयात्मक संकलन्।

सरस्वती तमो हन्त्री भास्वरा ज्ञान रश्मिभिः।

भासतां मम लेखन्याः शरद्व्योम रूचौ मुखे ॥

© Copyright, Hindu Heritage Society, 2013.

विषय सूची।

प्राक्कथन (PREFACE)	श्री सत्य नारायण कथा (English)
सत्य नारायण पूजा – एक बिचार	सरल हवन विधि।
सरल पूजन विधि।	आरतियाँ।
श्री सत्य नारायण पूजन।	पुष्पाञ्जलि, प्रार्थना।
श्री सत्य नारायण अर्चना।	विसर्जन एवं शान्ति पाठ।
श्री सत्य नारायण कथा (पद्य)।	कीर्तन एवं भजन।
श्री सत्य नारायण कथा (हिन्दी)।	Intro. to HHS

प्राक्कथन (PREFACE)

भगवान वेद अपौरुषेय हैं। इनकी रचना किसी प्राकृत पुरुष के द्वारा नहीं हुई बल्कि यह परमात्मा की उदार वाणी सर्वजन हिताय प्रवाहित हुई है। ऐसे सर्वमान्य वेदों के वर्तमान में उपलब्ध एक लक्ष्य ऋचाओं में अस्सी हजार ऋचायें कर्मकाण्ड परक हैं अतः यह निर्विवाद रूप से सिद्ध होता है कि भारतीय संस्कृति की आदि परम्परा में कर्म काण्ड का प्रमुख स्थान रहा होगा।

सकाम कर्मानुष्ठान से मनवाँछित फल की प्राप्ति का सिद्धान्त भी उतना ही प्राचीन है जितनी प्राचीन हमारी सभ्यता है। सकाम कर्मानुष्ठान की परम्परा में ***सत्य नारायण*** पूजा का सर्वाधिक महत्व देखने को मिलता है। गरीब हो या धनवान। मूर्ख हो या विद्वान। यह सर्व सुलभ व्रत प्रायः सभी के यहाँ सम्पन्न होता है। कुछ विधान भेद के साथ यह पुजा प्रत्येक हिन्दु बड़ी श्रद्धा से सम्पन्न करता है।

बहुधा समाज में कुछ लोग विधि का ठीक से ज्ञान न होने के कारण अशास्त्रीय पद्धति से इस पूजा को सम्पन्न कराते हैं यह देख कुछ जानकार लोगों ने हमसे अनेक बार आग्रह किया था कि कोई प्रामाणिक पुस्तिका तैय्यार की जाय। फलतः हमें इस दिशा में विचार करना पड़ा तथा अल्प परिश्रम से ही यह कार्य सम्पन्न हो गया।

लोगों कि रूची संगीत के प्रति नैसर्गिकी होती है और यह कान्ता सम्मित उपदेश विधा ही आज के जन मानस को अधिक रूचिकर है। अतः इस लधु संग्रह में देश के मूर्धन्य विद्वानों की अमृत तुल्य पद्यात्मक वाणी के साथ साथ प्रामाणिक कर्मकाण्ड के ग्रन्थों से शास्त्रीय पद्धति में सरल पूजन क्रम को भी संग्रहित किया गया है तथा प्रत्येक अध्याय के सार तत्व को शीर्षक रूप में प्रस्तुत कर चिन्तन का मार्ग प्रशस्त किया है जो अन्य प्रकाशित पुस्तिकाओं में अप्राप्य है।

प्रथम संस्करण की लोक प्रियता को देखते हुये इसका द्वितीय संस्करण २००६ मे भगवत कृपा से तब सम्पन्न हुवा जब हमारे परम स्नेही **श्री असीम शेखर जी** ने अपनी पत्नी **स्वर्गीय विनीता शेखर** जी की स्मृति में उनके निधन की प्रथम वर्ष गाँठ पर प्रकाशित किया था॥

समाज मे इस पुस्तक की लोक प्रियता को देखते हुये श्री राकेश जी एवं सरल सहगल जी । श्री सुनील मिश्रा एवं श्रीमती सुनिता मिश्रा जी ने एक बार पुनः इस त्रितीय संस्करण के प्रकाशन की जिम्मेदारी अपने ऊपर ली और कुछ परिवर्तन के साथ यह पुस्तक एक बार पुनः आप के हाथ में देख कर मुझे अत्यन्त प्रशन्नता हो रही है॥

सत्य नारायण प्रेम का पर्याय वाची है। यह प्रेम सुमन, **सहगल परिवार । मिश्रा** परिवार तथा अन्य सहयोगियों ने छपवा कर आप के लिये उपलव्ध कराया है। भक्तों

की रूचि के अनुरूप इस त्रितीय संस्करण में पूजन, कथा (गद्य तथा पद्य में) एवं कुछ प्रसिद्ध भजनों का समावेश प्रथम एवं द्वितीय संस्करण की अपेक्षा अधिक महत्व पूर्ण बनाता है ॥

सम्पूर्ण विषय वस्तु को दुबारा टाइप करके याने लिख करके पुस्तक का रूप देने में हमारे **पूज्य पण्डित जगदीश महाराज (J.P.) तथा उनके परिवार** का विषेश योगदान रहा है तथा अन्यान्य पण्डितों का भी इसमे सहयोग प्राप्त हुवा है। मैं इन सभी का हृदय से आभारी हूँ।

मेरी पत्नी राधिका जी के सहयोग के बिना मेरे लिये यह कार्य असम्भव था अतः इस की सम्पन्नता में उनका भी अविस्मरणीय योगदान है ॥

अन्त में मेरा विश्वास है कि सनातन धर्मावलम्बी इस संग्रह से यथाशक्य लाभ उठायेंगे तथा उदारमना गुरुजन वृन्द इसकी त्रुटियों के प्रति हमें सचेत करने की कृपा करेंगे ॥

गुरु पूर्णिमा।
२२ / ०७ / २०१३

विनीतः
नारायण दत्त भट्ट (शास्त्री)

सत्य नारायण व्रत : एक बिचार

सत्य नारायण की कथा का श्री गणेश देवर्षी नारद जी की चिन्ता से होता है । लौकिक चिन्ता जीवन को उलझा देती है जबकि पारमार्थिक चिन्तन व्यक्ति को दिशा प्रदान करता है । पुराणों में अनेक स्थानों पर जब कभी ऋषियों के मन में चिन्ता उत्पन्न हुइ तो समाज को एक नयी दिशा मिली। स्कन्द पुराण के रेवा खण्ड मे जब नारद जी को चिन्ता हुइ तो सत्य नारायण की उत्पत्ती हुयी। चिन्ता करते करते यदि अचिन्त्य परमात्मा का चिन्तन हो जाय तो समस्या समाधान बन जाती है ॥

जीवन में सत्य आ जाय तो नारायण स्वयं चले आते हैं । जिस के जीवन मे सत्य होता है उसे यश, कीर्ति और प्रतिष्ठा कभी नहीं छोड़ते । सत्य के साथ नारायण का बड़ा सम्बन्ध है । नारायण उसे कहते हैं जो जल में निवास करता हो । जल को विशुद्ध प्रेम माना गया है । विशुद्ध प्रेम के लिये पवित्र अन्तः करण चाहिये । अन्तः करण पवित्र होता है सद् विचार से । निर्मल मन में ही शुद्ध विचार उत्पन्न होंगे और मन निर्मल होगा हरिगुण गान से या कथा श्रवण से ॥

शरीर से सेवा, मन से चिन्तन तथा वाणी से गुणगान करना ही पूजा है । पूजा में प्रसाद तथा पंचामृत का प्रयोग होता है । सत्य नारायण भगवान को पंचामृत चढ़ाने का अर्थ होता है अपनी ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों को पंच तत्वों से स्नान कराना। असली पंचामृत है-

सत्य, दया, क्षमा, धैर्य एवं नम्रता ।

पंच तत्वों मे विशेष शक्ति होती है जैसे पृथ्वि मे सुगन्ध । जल मे शीतलता । अग्नि या तेज मे सुरक्षा । वायु मे पवित्रता तथा आकाश मे व्यापकता । सत्य नारायण के पूजन से भक्त के अन्दर ये सभी गुण समाजाते हैं ॥ जीवन दिव्य बन जाता है॥

पण्डित नारायण भट्ट॥

॥ मण्डप की रचना ॥

श्री सत्य नारायण पूजा प्रकरण।

निश्चित दिन में घर की पूर्व या उत्तर दिशा में ***श्री सत्य नारायण पूजा*** हेतु सुन्दर मण्डप निर्माण करना चाहिए। मण्डप निर्माण विधि इस प्रकार है - सर्व प्रथम, लगभग एक मीटर लम्बी तथा एक मीटर चौड़ी चौकी का प्रबन्ध करें। उसकी ऊँचाई ३०० सेन्टिमीटर के लगभग हो। उसके चारो कोनों में केले के पत्ते बांध कर एक लघु मण्डप निर्माण किया जा सकता है।

चौकी पर सुन्दर पीला या श्वेत वर्ण का वस्त्र बिछा हो। मण्डप की नैऋत्य (S.W) कोनें में जलपात्र, शंख, घंटा, धूपदानी और तेल का दीपक रखें। मण्डप के अग्नि कोण (S.E) में घृत दीपक तथा अर्घ्य रखें। मण्डप के वायुव्य (N.W) कोनें में कुंकुम, चन्दन, हल्दी, अक्षत, पुष्प रखें एवं अन्य पूजनोपयोगी वस्तु भी निकट ही रखें। घट स्थापन विधि से मण्डप के ईशान कोण (N.E) में (ऊपर दिये चित्र में देखें) कलश स्थापित करें तथा पूर्व दिशा में पूर्ण पात्र के ऊपर भगवान सत्यनारायण की स्वर्ण मयी प्रतिमा प्राण प्रतिष्ठा पूर्वक क्रम के अनुसार स्थापित करनी चाहिए। नवग्रह मण्डल उत्तर तथा षोडश मातृका पूजन दक्षिण दिशा में किया जाता है। पुरोहित तथा यजमान यथायोग्य दक्षिण और पश्चिम में बैठें।

पूजन प्रारम्भ करने से पहले शुद्ध धुले हुवे वस्त्र पहन कर अन्य सभी प्रकार के कार्यों से निवृत हो मन तथा शरीर से परमात्मा के सान्निध्य में पूरी निष्ठा तथा भाव से बैठें। बैठने के लिए कुशासन, कम्बलासन, व्याघ्रचर्म या मृगचर्म का उपयोग किया जाता है। यदि पूजन हवनात्मक हो तो पूजा आरम्भ करने से पूर्व ही वेदी के निकट ही हवन कुण्ड की स्थापना तथा हवनोपयोगी सामग्री को एकत्रित कर लेना चाहिए। मण्डप की साज सज्जा भी पूजन प्रारम्भ होने से पूर्व ही कर लेनी चाहिये।

॥षट्कर्म॥

क्रिया शरीर को परमात्मा से जोड़ती है तथा मन्त्र मन को परमात्मा से जोड़ते हैं। परमात्मा नित्य शुद्ध बुद्ध है अतः सर्व प्रथम निम्न मन्त्र से शरीर पर तथा पूजा सामग्री पर जल के छींटे देते हुवे मन्त्र बोलें॥

॥ पृथ्वी पूजन॥

पृथ्वी का स्पर्श कर इस मन्त्र को बोलें तथा पृथ्वी पूजन करें।

पृथ्वी त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवी पवित्रं कुरू चासनम्॥

॥ भूतोत्सादन मन्त्र ॥

ॐ अपसर्पन्तु ते भूता। ये भूता भूतले स्थिताः।
ये भूता विध्न कर्तारस्ते। नश्यन्तु शिवाज्ञया॥
अपक्रामन्तु भूतानि। पिशाचा सर्वतो दिशम्।
सर्वेषाम् अविरोधेन। पूजा कर्म समारभे॥

॥ पवित्री करण ॥

क्रिया शरीर को परमात्मा से जोड़ती है तथा मन्त्र मन को परमात्मा से जोड़ते हैं। परमात्मा नित्य शुद्ध, बुद्ध है अतः सर्व प्रथम निम्न मन्त्र से गंगा जी का ध्यान कर जल के छींटे शरीर पर तथा पूजा सामग्री पर देते हुवे मन्त्र बोलें॥

गङ्गे च यमुने चैव, गोदावरि सरस्वति।
र्नमदे सिंधु कावेरी, जले ऽस्मिन् संनिधिं कुरू॥
ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

॥ आचमन ॥

इन तीन मन्त्रों से तीन बार आचमन करें।

ॐ केशवाय नमः ॥ ॐ माधवाय नमः ॥ ॐ नारायणाय नमः ॥

इस मन्त्र को बोल कर हाथ धो लें।

हृशीकेशाय नमः। गोविन्दाय नमः। इति हस्तौ प्रक्षाल्य ॥

अथवा निम्न लिखित मन्त्रों से भी आचमन किया जा सकता है ॥

ॐ आत्मतत्वं शोधयामि स्वाहा ॥ *आचमन करें।*

ॐ शिवतत्वं शोधयामि स्वाहा ॥ *आचमन करें।*

ॐ विद्यातत्वं शोधयामि स्वाहा ॥ *आचमन करें।*

ॐ सर्वतत्वं शोधयामि स्वाहा ॥ *हाथ धो लें।*

बांयें हाथ में थोड़ा सा जल लेकर दायें हाथ की अनामिका तथा मध्यमा उंगली से अङ्ग स्पर्श करें।

ॐ वाङ्मे आस्ये अस्तु। मुख का स्पर्श करें।

ॐ नसोर्मे प्राणो अस्तु। नांक का स्पर्श करें।

ॐ अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु। आंखों का स्पर्श करें।

ॐ कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु। कांनों का स्पर्श करें।

ॐ बाह्वोर्मे बलमस्तु। बांहों का स्पर्श करें।

ॐ ऊर्वो मे ओजोऽस्तु। जांघों को स्पर्श करें ।

बचा हुआ जल मस्तक के ऊपर से पूरे शरीर पर छिड़कें।

ॐ अरिष्टानि मे अङ्गानि तनुस्तन्वा मे सहसन्तु।

पूजन प्रारम्भ करने से पहले शुद्ध धुले हुवे वस्त्र पहन कर अन्य सभी प्रकार के कार्यों से निवृत हो मन तथा शरीर से परमात्मा के सान्निध्य में पूरी निष्ठा तथा भाव से बैठें। बैठने के लिए कुशासन, कम्बलासन, व्याघ्रचर्म या मृगचर्म का उपयोग किया जाता है॥

॥ तिलक धारण ॥

तिलक के बिना सत्कर्म सफल नहीं होता। तिलक बैठ कर लगाना चाहिये। अपने आचार के अनुसार मिट्टि, चन्दन, और भस्म, इन में से किसी के द्वारा भी तिलक किया जा सकता है। भगवान पर चढ़ाने से बचे हुए चन्दन को ही लगाना चाहिये। अँगूठे से या अनामिका अंगुली से नीचे से ऊपर की ओर चन्दन लगायें॥

नमो ब्रह्मण्य देवाय, गोब्राह्मण हिताय च।
जगद्धिताय कृष्णाय, गोविन्दाय नमो नमः॥

इस मन्त्र से ब्राह्मण यजमान को तिलक करें।

चन्दनन्तु महत्पुण्यं पवित्रं पापनाशनम्।
आपदं हरते नित्यं लक्ष्मिस्तिष्ठतु सर्वदा।॥

इस मन्त्र से यजमान पुरोहित को कलावा बाँधे।

ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षामाप्नोति दक्षिणां।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते॥

इस मन्त्र से पुरोहित यजमान को रक्षाबन्धन करे।

येन बद्धो बली राजा, दानवेन्द्रो महाबलः।

तेन त्वामनु बध्नामि, रक्षे मा चल मा चल॥

इस मन्त्र से दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली में पवित्री धारण करें।

ॐ कुशमूले ऽस्थितो ब्रह्मा, कुशमध्ये जनार्दनः।

कुशाग्रे संस्थितो शम्भुः, त्रिभिर्देवा कुशस्थितौ॥

॥ प्राणायाम विधि ॥

तत्पश्चात प्राणायाम करें। विधि इस प्रकार है - सर्व प्रथम सुखासन में बैठ जायें, फिर दायें हाथ के अंगूठे से दायीं नासिका छिद्र को बन्द कर बाह्या रेचक करें। (भीतर की वायु को धीरे धीरे बाहर निकालें।) पुनः मन ही मन एक आवृति मन्त्र बोलते हुए वाम नासिका से स्वाँस भीतर को खींचे एवं चार आवृति (मन ही मन) मन्त्र बोलें। दो आवृति मन्त्र के साथ स्वास को दायीं नासिका से धीरे धीरे बाहर कर दें, इस प्रकार पूरक कुम्भक तथा रेचक की प्रक्रिया से प्राणायाम बनता है जो योग का चतुर्थ महत्वपूर्ण अंग है। कम से कम तीन प्राणायाम कर हाथ धो आचमन कर हाथ में पुष्पाक्षत लेकर निम्नोक्त स्वस्ति वाचन करें।

॥ स्वस्ति वाचन ॥

हरिः ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।

स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥

पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो विदथेषु जग्मयः।

अग्निर्जिहवा मनवः सूर चक्षसो विश्वे नो देवा अवसागमन्निह ॥

भद्रं कर्णेभिः ऋणुयाम देवा भद्रं पश्येमार्क्षभिर्यजत्राः ।

स्थिरै रङ्गै स्तुष्टुवा ꣳ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥

शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम् ।

पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः ॥

अदितिर्द्यौ रदिति रन्तरिक्ष मदितिर्माता स पिता स पुत्रः ।

विश्वेदेवा अदितिः पञ्चजना अदितिर्जात मदितिर्ज नित्वम् ॥

द्यौः शान्ति रन्तरिक्ष ꣳ शान्तिः पृथिवी शान्ति रापः शान्ति रोषधयः शान्तिः । वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ꣳ शान्तिःशान्ति रेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥ यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु । शं नः कुरु प्रजाभ्यो ऽभयं नः पशुभ्यः ॥ सुशान्तिर्भवतु ॥

श्री मन्महागणाधिपतये नमः ।

लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः ।

उमा महेश्वराभ्यां नमः ।

वाणी हिरण्य गर्भाभ्यां नमः ।

शची पुरन्दराभ्यां नमः ।

माता पितृ चरण कमलेभ्यो नमः ।

इष्ट देवताभ्यो नमः ।

कुल देवताभ्यो नमः ।

ग्राम देवताभ्यो नमः। वास्तु देवताभ्यो नमः।

स्थान देवताभ्यो नमः। सर्वेभ्यो देव्येभ्यो नमः।

सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः। सिद्धि बुद्धि सहिताय श्री मन्महागणाधिपतये नमः।

॥ गणपति वंदना ॥

सुमुखश्चैक दन्तश्च कपिलो गज कर्णकः। लम्बोदरश्च विकटो विध्ननाशो विनायकः॥
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः। द्वादशै तानि नामानि यः पठे क्षृणु यादपि॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा। संग्रामे संकटे चैव विध्नस्तस्य न जायते॥
शुक्लांबरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्न वदनं ध्यायेत् सर्व विध्नोप शान्तये॥
अभीप्सितार्थं सिध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः। सर्व विध्न हरस्तस्मै गणाधिपतयेनमः।
सर्व मङ्गल माङ्गल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके। शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते॥
विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवं। वंदे काशीं गुहां गङ्गां भवानीं मणिकर्णिकाम्॥
सर्वदा सर्व कार्येषु नास्ति तेषाम मंगलम्। येषां हृदिस्थितो भगवन् मंगलायतनो हरिः॥

तदेव लग्नं सुदिनं तदेव, ताराबलं चन्द्रबलं तदेव।

विद्याबलं दैवबलं तदेव, लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रि, युगं स्मरामि॥

लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः। येषामिन्दीवर श्यामो हृदयस्थो जनार्दनः॥
यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः। तत्र श्रीर्विजयोर्भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम॥
अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते। तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहं॥
स्मृते सकल कल्याणं भाजनं यत्र जायते। पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम्॥
सर्वेष्वारम्भ कार्येषु त्रयस्त्रि भुवनेश्वराः। देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशान जनार्दनाः॥

हाथ मे रखे हुये अक्षत पुष्प पूजन की वेदी पर चढ़ा दें।

॥ संकल्प ॥

प्रत्येक सत् कर्म संकल्प पुरस्सर होता है, अतः हाथ में जल, पुष्प, अक्षत तथा पैसे रख कर निम्न मन्त्र बोलें।

हरिः ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः नमः परमात्मने श्री पुराण पुरुषोत्तमाय, विष्णो राज्ञया प्रवर्त मानस्य अद्य ब्रह्मणोऽह्नि, द्वितीय परार्धे श्रीश्वेत बाराह कल्पे वैवस्वत मंवन्तरे, अष्टा विंशति तमे, कलियुगे कलि प्रथम चरणे, भूर्लोके, आर्यावर्तैक देशान्तर्गत पुण्य पवित्र क्षेत्रे (अमुक) महाद्वीपे (अमुक) नगरे (अमुक) नाम ग्राम स्थाने शष्ट्यब्दानां मध्ये (अमुक) संवत्सरे अमुकायने महा मांगल्य प्रदे मासानां मासोत्तमे (अमुक) मासे, (अमुक) पक्षे, (अमुक) तिथौ, (अमुक) वासरे, नक्षत्रे, योगे, मुहूर्ते, लग्ने (अमुक) काले (अमुक) गोत्र उत्पन्नः (अमुक) नामोऽहं (नाम्न्यहं - स्त्री के लिये) श्रुति स्मृति पुराणोक्त फल प्राप्त्यर्थम् मम स कुटुम्बस्य स परिवारस्य क्षेमस्थैर्यायुरारोग्यैश्वर्याभि बृध्यर्थम् आधि दैविक आधि भौतिक अध्यात्मिक त्रिविध ताप शमनार्थ धर्मार्थ काम मोक्ष प्राप्त्यर्थम् , श्री गौरि, गणेश, कलश, षोडशमात्रिका, नवग्रह

आदिनां पूजन पूर्वकं भगवतो श्री सत्य नारायणस्य यथाविधि पूजनञ्चाऽहं करिष्ये ॥

हाथ का जलाक्षत सुरक्षित स्थान पर छोड़ दें।

आगे पूजन का क्रम इस प्रकार रहेगा। सर्व प्रथम गणेश पूजन, फिर ईशान कोण में स्थित वरुण कलश पूजन, फिर गौर्यादि षोडश मातृका , सूर्यादि नवग्रह मंडल, पञ्चलोकपाल देवता , दश दिग्पाल देवता तथा अन्त में प्रधान देव - सत्य नारायण का पूजन होगा। पूजन शक्ति, समय तथा सामार्थ्य के अनुसार किया जा सकता है - यथाः

पञ्चोपचार - गन्ध, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्य।

दशोपचार - पाद्य, अर्घ्य, आचमन, स्नान, वस्त्र, गन्ध, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्य।

षोडशोपचार - पाद्य, अर्घ्य, आचमन, स्नान, वस्त्र, आभूषण, गन्ध, पुष्पाञ्जलि, धूप, दीप, नैवेद्य, आचमन, ताम्बूल, स्तुति, पुष्प तथा नमस्कार।

यौं तो शास्त्रों में चौंसठ उपचार से भी पूजन सम्पन्न करने का विधान मिलता है लेकिन पूजा में वस्तु की अपेक्षा भाव का ही अधिक महत्व बताया गया है।

ध्यान रहे किः यहां पर संक्षिप्त पूजन का क्रम कहा गया है किन्तु विशाल यज्ञों में पूजन के क्रम में परिवर्तन तथा परिवर्धन होता है। एवं सम्प्रदाय अथवा उत्तर दक्षिणाञ्चलीय भेद से भी प्रत्येक क्रम तथा विधान में पार्थक्य दृष्टिगोचर होता है॥

सर्व प्रथम बायीं ओर स्थित घण्टी का पूजन करें तथा घण्टा नाद करें।

॥ घण्टी पूजन मन्त्र ॥

आगमार्थं तु देवानां, गमनार्थं च रक्षसाम् ।

कुरू घण्टे वरं नादं, देवता स्थान सन्निधौ ॥

ॐ घण्टस्थ गरूड़ाय नमः। पुष्प अक्षतां समर्पयामि ॥

॥ शङ्ख पूजन मन्त्र ॥

त्वं पुरा सागरोत्पन्नो, विष्णुना विधृतः करे।

निर्मितः सर्वदेवैश्च, पाञ्चजन्य नमोऽस्तु ते ॥

ॐ पाञ्चजन्याय विद्महे पवमानाय धीमहि तन्नः शङ्ख प्रचोदयात् ॥

पवमानाय नमः। पाञ्चजन्याय नमः। पद्मगर्भाय नमः।

अम्बुराजाय नमः। कम्बुराजाय नमः। धवलाय नमः।

ॐ शङ्खं पूजयामि, नमस्करोमि, पुष्पाक्षतां समर्पयामि।

॥ दीपक पूजन मन्त्र ॥

दीपो ज्योतिः परं ब्रह्म, दीप ज्योतिर्जनार्दनः।

दीपो हरतु मे पापं, दीप ज्योतिर्नमोऽस्तु ते ॥

भो दीप देवरूपस्त्वं, कर्म साक्षी ह्यविघ्नकृत्।

यावत्कर्म समाप्तिः स्यात् , तावत्त्वं सुस्थिरो भव ॥

क्रिया एवं भावनाः– देव पूजा के क्रम में (देवालय को छोड़ कर) सर्व प्रथम उस देव का ध्यान तथा आवाहन किया जाता है। फिर पाद प्रक्षालन के लिये पाद्य, हस्त प्रक्षालन के लिये अर्घ्य, आचमन तथा स्नानार्थ जल दिया जाता है। पुनः पञ्चामृत से स्नान कराया जाता है। अन्य सुगन्धित द्रव्यों से भी स्नान "अभिषेक" करा कर शुद्ध वस्त्र तथा जनेउ प्रदान किया जाता है। पुनः गन्ध, अक्षत, पुष्प प्रदान करने के बाद, दक्षिण भारत में अंग पूजन का विशेष विधान होता है, जो नाम मन्त्रों से होता है। तदनन्तर धूप सुंघायें, दीपक दिखायें, हाथ धो कर नैवेद्य (प्रसाद) भगवान के समक्ष रखें उस में तुलसी दल छोड़ें (यदि विशिष्ट पूजन में निषेध न हो तो) पुनः ताम्बूल (पान) ऋतुफल तथा दक्षिणा समर्पित करने का विधान है। अन्त में आरती और पुष्पाञ्जलि करके हवन,पाठ, कथा कर प्रसाद ग्रहण करें। यहां पर सभी देवों का मात्र ध्यान तथा आवाहन दिया गया है किन्तु मन्त्र सभी देवताओं की पूजा के लिये गणपति पूजन अथवा सत्य नारायण पूजन के अनुसार ही रहेंगे, उन्हीं मन्त्रों से सभी देवों की पूजा की जा सकती है।षोडशोपचार पूजन English मे भी दिया है ताकी सभी के काम आसके ।

॥ गणेशाम्बिका का ध्यान पूजन ॥

ॐ गणानां त्वा गणपति ꣳ हवा महे, प्रियाणां त्वा प्रियपति ꣳ हवा महे। निधीनां त्वा निधिपति ꣳ हवामहे, वसो मम। आहमजानि गर्भधमा, त्वमजासि गर्भधम्॥

ॐ अम्बे अम्बिके अम्बालिके, न मा नयति कश्चन।

ससस्त्य श्वकः सुभद्रिकां, काम्पील वासिनीम्।

सर्व मंगल मांगल्ये, शिवे सर्वार्थ साधिके।

शरण्ये त्र्यम्बिके गौरि, नारायणि नमोऽस्तु ते॥

सर्वदा सर्वकार्येषु, नास्ति तेषाम मंगलम्।

येषां हृदिस्थो भगवन् , मंगलाय तनं हरिः ॥

गं गणपतये नमः आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि,

आवाहनार्थे अक्षतान् समर्पयामि नमस्करोमि ॥

ॐ भूर्भुव स्वः सिद्धि बुद्धि सहिताय श्री मन्महा गणाधिपतये नमः ॥

आवाहन के पश्चात निम्नोक्त क्रम के अनुसार पूजन करना चाहिये।

Step by step puja

Step 1: *Dhyaana and Aavaahan*:

Sit infront of the Image or Icon of your favorite deity (Ista devata), meditate on the form in front of you. For example, for Vishnu, one should visualise the conch, chakra and the mace in his hands and the lotus flower.

Aavahan means 'to invite'. When we want an important person to visit our house, we extend a formal and respectful welcome. This is 'Avaahana'. While inviting, we remember his good qualities. This is called 'Dhyaana'.

Then, invoke the deity into the pictures or icon through prayers. After this is performed, what was previously an object becomes potent and holy. At this time, worshippers say "Almighty, I know you are everywhere. I know you are also in this Photograph/Icon." While doing the Pooja, one should envisage The Supreme himself in the Icon. I am seated infrount The Almighty who has manifested in the icon whom I humbly request to accept my pooja and prayers.

Ganesh Ji ka dhyan:

VIGHNESHVARAYA VARDAYA SURAPRIYAYA,

LAMBODARAYA SAKALAY-JAGADHITAAYA,

NAGAANANAYA SHRUTI YAGYA-VIBHUSHITAYA,

GAURI SUTAYA GANA NATHA NAMO NAMASTE.

Dhyanarthe Akshat- pushpaani samarpayaami. Om Shri Gan Nathaya namah.

OM GANANANTVAA GANPATI GVAN HAVAAMAHE,

PRIYANANTVA PRIYAPATI GVAN HAVAAMAHE,

NIDHINATVA NIDHIPATI GVAN HAVAMAHE,

VASOMAM AAHAM JANI GARBHADHAMA,

TVAMAJASI GARBHADHAM.

Om Bhur Bhuvah Svah, Siddhi Buddhi sahitaya maha Ganadhi pataye namah. Ganpatim avahayami, Sthapayami, Pujayami, Namaskaromi cha, Akshatan samarpayami.

Step 2 - *Aasana*:

Offering of seat to the guest is termed "Aasana Samarpana" The next step is offering seat to the Almighty. This is done by the gesture of touching the icon, as if asking Him to sit. Mentally visualise each step - like The Supreme coming and being seated in front of us etc.

ANEKA RATNA SANYUKTAM NANAMANI GANANVITAM,

IDAM HEMA-MAYAM DIVYAM-AASANAM PRATIGRIHYATAM.

Om maha ganadhi pataye namah, Aasanarthe pushpani samarpayami.

Step 3 - *Paadhya*:

In this step God's feet are washed with water.

Before entering the house, a person is required to wash his hands and feet-This is a custom followed in India. Washing feet of the Icon is done by pouring a few drops of water before the icon. The above said practice may not be relevant in cold regions. According to Yoga Shastra, the Nadis [nerves] terminate in the hands and the feet. It is therefore important to keep the hands and feet clean.

GANGADI SARVA TIRTHEBHYO ANITAM TOYMUTTAMAM,

PADHYARTHAM TE PRADASYAMI GRIHAN ARMESHVARA.

Om maha ganadhi pataye namah. Padhyoh padyam samarpayami.

Step 4 - *Arghya*: (*Arghya means water to wash the hands).*

Water is offered to deity to wash His hands. This is again done by pouring a few drops of water before the icon.

GANDH PUSHPAKSHTAIR-YUKTAM ARGHYAM SAMPADITAM MAYA,

GRIHAN PANCH DEVATVAM PRASANNA BHAVA SARVADA

Om maha ganadhi pataye namah. Hastyoh arghyam samarpayami.

Step 5: *Aachamanya and Madhuparka*:

Water is offered to wash his mouth and face in the earlier prescribed manner.

Madhuparka (Madhu-Honey) is a beverage made of honey and milk is offered for The Supreme. Mix milk and honey in a bowl and place it in front of the deity.

KARPUREN SUGANDHEN VASITAM SVADU HEETALAM,

TOYAM ACHMANIYARTHAM GRIHAN PARMESHVARA.

Om maha ganadhi pataye namah.. Hastyoh arghyam samarpayami.

Step 6: *Abhishekam or Snaanam*:

Abishekam literally means bathing (GOD).

For an Icon, a few drops of water can be poured on it and then dried with a clean cloth. For a photograph of the deity it is sufficient if you offer a few drops of water before the image. In addition to water, you can pour milk, rose water, water mixed with sandalwood paste etc. We request the guest to bathe. In the case of an idol, we bathe it with different articles like milk, curd, ghee etc.. We can also bathe the idol with plain water.

MANDAKINYASTU YADVARI SARVA PAAP-HARAM SHUBHAM,

TADIDAM KALPITAM DEV SNANARTHAM PRATIGRIHYATAM.

Om maha ganadhi pataye namah. Snanartham jalam samarpayami.

Panchamrit Snan:

Milk (preferably cow milk), Yoghurt, Honey, Sugar and Ghee are mixed togethee, However, there may be certain regional variations in ingredients.For example, ripe banana is used instead of sugar and some people may also include tender coconut in the panchamrit. It is offerd to God for bath.

PAYO DADHI GHRITAM CHAIVA MADHUM CHA SHARKARANVITAM,

PANCHAMRITAM MAYAA- NITAM SNANARTHAM PRATIGRIHYATAM.

Om maha ganadhi pataye namah. Panchamrit Snanam samarpayami

Gandhotak Snan: *(Ganga jal or Rose Water)*

MALYACHAL SAMBHUTAMCHANDANAGURUMISHRITAM.
SALILAM DEV DEVESH GANDHOYAMPRATIGRIHYATAM.

Om maha ganadhi pataye namah. Gandhotak Snanam samarpayami.

Suddhodak snan: *(chanting the mantra below, do water abhishekam)*

SHUDDHAM YAT SALILAM DIVYAM GANGAJAL SAMAM SMRITAM,
SAMARPITAM MAYA BHAKTYA SNANARTHAM PRATIGRIHYATAM.

Om maha ganadhi pataye namah. Suddhodak Snanam samarpayami.

Step 7: *Vastra*: *Offering of dress including an upper garment.*

Usually flowers are offered in place of these but you can also offer a piece of cloth. We offer clothes to wear after the bath.

SHEET VATOSHNA SANTRANAM LAJJAYA RAKSHANAM PARAM,
DEHALANKARANAM VASTRAMATAH SHANTIM PRAYACCHA ME.

Om maha ganadhi pataye namah. Vastram samarpayami.

Step 8: *Gandha*:

Sandalwood powder and kum-kum (red powder Hindus wear on their forehead) is offered to him. It is an ancient tradition to apply sandal paste (gandha) on the forehead which keeps the body cool.

SHRI KHAND CHANDANAM DIVYAM GANDHADYAM SUMANOHARAM,
VILEPANAM SUR SHRESHTHA, CHANDANAM PRATIGRIHYATAM.

Om maha ganadhi pataye namah. Gandhanu lepanam samarpayami.

Sindur:

SINDURA MARUNABHASAM JAPA KUSUM SANNIBHAM,
ARPITAM TE MAYA BHAKTYA PRASEED PARMESHVARA.

Om maha ganadhi pataye namah. Sinduram samarpayami.

Rice:

AKSHTASHCHA SURSHRESHTHA KUMKUMAKTAH SUSHOBHITA,
MAYA NIVEDITA BHAKTYA GRIHAN PARMESHVARA.

Om maha ganadhi pataye namah. Akshatan samarpayami.

Step 9: *Aabharana*

Offering of ornaments made of Gold / Silver / Stones etc.

While doing this, imagine putting a necklace on God and then place a flower at his feet. Nowadays only women use flowers. In ancient times even men used to wear flowers just like women. Symbolically, flower signifies purity of our heart.

Step 10: *Pushpa mala*: *Offering a garland of flowers.*

MALYADINI SUGANDHINI MALATYADINI BHAKTITAH,

AYA HRITANI PUSHPANI PUJARTHAM PRATI RIHYATAM

Om maha ganadhi pataye namah. Pushpani pushpa malam samarpayami.

Step 11: *Archanaa*:

Flowers of various types are offered to the Lord along with the chanting of his holy names. In pooja, we offer different flowers while chanting the 108 or 1008 names of God.

Step 12: *Dhoop*:

Then showing incense stick.

The incense (agharbatti) can be lit and circled in clockwise manner three times in front of icon.

Dhoopa means fragrant smoke. According to Ayurveda, inhaling of smoke by burning certain herbs is considered to be good for health.

VANASPATI RASODBHUTO GANDADHYO GANDH UTTAMAH,

AAGHREYAH SARV DEVANAM DHOOPOYAM PRATIGRIHYATAM.

Om maha ganadhi pataye namah.Dhoopam aghrapyami.

Step 13: *Deepa*:

The next is offering a lighted lamp. This can be an oil lamp.

Deepa means light. Atma or self is conciderd to be a part of Eternal Light represented by The Supreme being. We offer Deepa as a symbolic gesture to express our intent desire to reunite with Him.

SAJYAM CHA VARTI SANYUKTAM VANHINA YOJITAM MAYA,
DEEPAM GRIHAN DEVESH TRAILOKYA TIMIRAPAHAM.

Om maha ganadhi pataye namah. Deepam darshyami. (Wash your hands), Hrishikeshaye namah,

Step 14: *Naivedya*: *Offer GOD some sweet- fruits or cooked food.*

Naivedya means offering different kinds of dishes. The practice of offering something to eat is prevalent everywhere.

SHARKHARA KHAND KHADYANI DADHI KSHEER GHRITANI CHA,
AHARANAM BHAKSHYA BHOJYAM CHA NAIVEDYAM PRATIGRIHATAM.

Om Pranaye svaha; Om Apanaye svaha; Om Vyanaye svaha; Om Samanaye svaha; Om Udanaye svaha.

Om maha ganadhi pataye namah. Naivedyam nivedayami.

Aachman:

Sprinkal few drops of water in a clockwise direction around the offerings (naivedya) three times.

Madhye achmaniyam jalam uttaraposhanam cha samarpayami.

Om maha ganadhi pataye namah. Achmaniyam samarpayami

Ritu phal:

IDAM PHALAM MAYA DEVA STHAPITAM PURATASTAVA,
TEN ME SAPHALA-VAPTIRBHAVET JANMANI JANMANI.

Om maha ganadhi pataye namah. Ritu phalani nivedayami.

Taamboola:

Taamboola comprises of betel leaf, betel nut, cardamom and clove. According to Ayurveda, intake of the Taamboola after a meal is considered a healthy habit.

POONGIPHALAM MAHADIVYAM NAGVALLI DALAIRYUTAM,

ELA LAWANG SAMYUKTAM TAMBOOLAM PRATIGRIHYATAM.

Om maha ganadhi pataye namah. Mukh suddhyarthe tamboolam samarpayami

Dakshina:

An offering or gift to God. The practice of giving dakshina is an expression of gratitude and love for what has been received on the spiritual path.

DAKSHINA HEM SAHITAM YATHA SHAKTI SAMARPITA,

ANANT PHALDAMENAM GRIHAN PARMESHVARA.

Om maha ganadhi pataye namah.Dravya dakshinam samarpayami.

Step 15: *Aarti*:

Light camphor or a wick dipped in ghee and offer it to the deity at the same time as reciting prayers. This is Aarati.

Aarati should be offered to the deity three times in a clockwise direction. After prayer one must keep the palm close to the light of the Aarati, just enough to take the warmth in your palm and pleace your palm gently on your eyes. This should be done with great concentration (Shraddha) and devotion (Bhakti).

Step 16: *Pradakshinaa and Pushpaanjali*:

Offer flowers at the feet of the Deity, symbolically thus offering one' Self to The Supreme.

After this, one has to offer his prostrations, prayers and songs to the deity.

To experience the original nature of the Almighty i.e., His Mantra form is the purpose of offering this service. By circumambulating (pradakshina), we imply that the Almighty is present in all directions. pradakshina is one such daily practice.

*The above mentioned sixteen services have a deep spiritual meaning, of which some are common things we do in our day to day life. "**Mananaat traayate iti mantraha**" –the repetitive chanting within one's mind purifies and protects him.*

(please follow all the mantras from Pushpanjali / Kshamaa Yaachnaa section of this book at the end).

Mantrapushpa: As mentioned in Narayana Sukta,

our heart is represented by a lotus bud. The act of offering the lotus- like heart (that has been sanctified by reciting the potent Mantras within one's mind) to The Supreme Being.

Anena asmabhi kritena poojanena Ganpatyadi avahitah, Devta santushtah vardah shantidah bhavantu.

विशेषार्घ्य – *ताम्र पात्र में जल, चन्दन, अक्षत, फल, फूल, दूर्वा, सुपारी और दक्षिणा रखकर अर्घ्य पात्र को हाथ में लेकर निम्नोक्त मन्त्र बोलना चाहिये –*

रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्य रक्षक ।

भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात् ।

द्वैमातुर कृपासिन्धो षाण्मातुराग्रज प्रभो ।

वरदस्त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद ।

अनेन सफलार्घ्येण वरदोऽस्तु सदा मम ।

॥ प्रार्थना ॥

विध्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय । लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय ॥

नागाननाय श्रुति यज्ञ विभूषिताय । गौरी सुताय गणनाथ नमो नमस्ते ॥

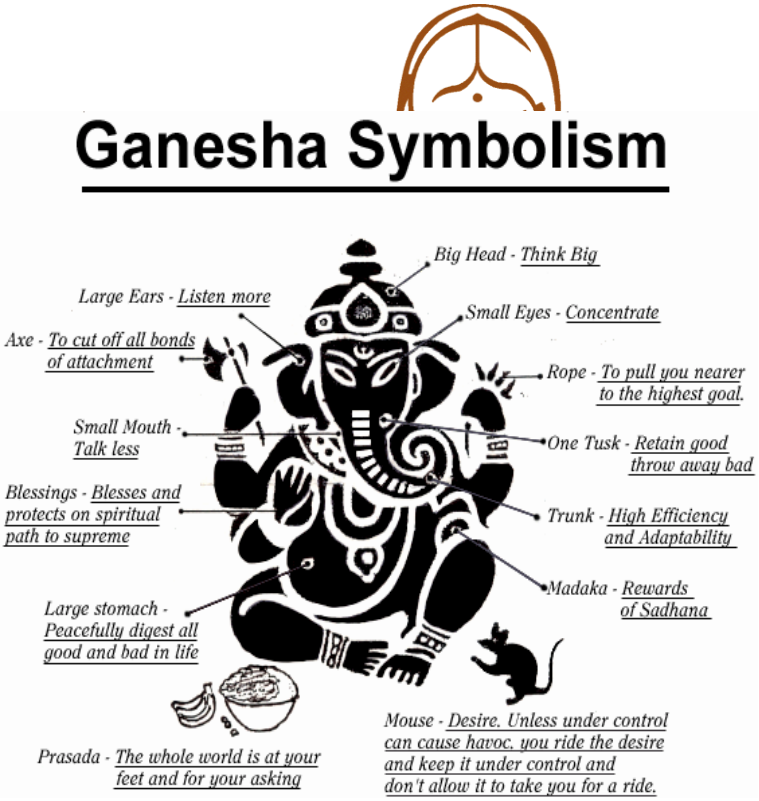

॥ जय जय गणपति ॥

जय जय गणपति जय जय गणेश । सिद्धि विनायक जय करुणेश ॥

१- पूजा होती प्रथम तुम्हारी । देव दनुज सब तुम से हारी ।

जयति गजानन जय करुणेश । जय जय मंगल मूर्ति गणेश ॥

२- लाभ और शुभ के तुम हो दाता । तुम हो विद्या बुद्धि विधाता ।

निर्मल बुद्धि करो अखिलेश । जय जय मंगल मूर्ति गणेश ॥

३- ऋद्धि सिद्धि के तुम हो स्वामी । देव नमामि नमामि नमामि ।

सब के विघ्न हरो बिघ्नेश । जय जय मंगल मूर्ति गणेश ॥

॥ कलश स्थापन पूजन ॥

वेदी के ईशान कोण में वरुण कलश की स्थापना करनी चाहिये। यह कोण पूर्वोत्तर कोण कहलाता है। कलश में पञ्चरत्न, सप्तमृतिका, पञ्चपल्लव, चन्दन, दूब, सुपारी एवं पैसा डाल कर उसे वस्त्र से परिवेष्टित कर उसके ऊपर पूर्ण पात्र (चावल से भरा हुवा पात्र) रखें तथा उसके ऊपर वस्त्राच्छादित नारियल रखें। कलश में वरुण देव का ध्यान और आवाहन करें।

ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा बन्द मानस्तदा, शास्ते यजमानो हविर्भिः।

अहेड़मानो वरुणेह वोध्युरूशꣳ, स मा न आयुः प्र मोषीः॥

अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं, सायुधं सशक्तिकं आवाहयामि।

वरुणाद्यावाहित देवताभ्यो नमः, ध्यानार्थे पुष्पं समर्पयामि।

ॐ अपांपते वरुणाय नमः॥

पुनः हाथ में अक्षत पुष्प लेकर कलश में वेदों, तीर्थों, नदियों, सागरों एवं देवी देवताओं का आवाहन करें।

कलशस्य मुखे विष्णु, कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।

मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा, मध्ये मातृगणा स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे, सप्त द्वीपा बसुन्धरा।

ऋगवेदो ऽथ यजुर्वेदः, सामवेदोः ह्यथर्वणः॥

अङ्गैश्च सहीताः सर्वे, कलशं तु समाश्रिताः।

आयान्तु देव पूजार्थम्, दुरित क्षय कारकाः॥

गङ्गे च यमुने चैव, गोदावरि सरस्वति।

नर्मदे सिंधु कावेरी, जले ऽस्मिन् संनिधिं कुरू॥

सर्वे समुद्राः सरितः, तीर्थानि जलदा नदाः।

आयन्तु मम शान्त्यर्थम् दुरित क्षय कारकाः॥

पश्चात पूर्व क्रमानुसार प्रतिष्ठा,पाद्य अर्घ्यादि उपचारों से पूजन कर कर्पूर आरती, पुष्पाञ्जली के उपरान्त निम्न लिखित प्रार्थना मन्त्रों को बोलें।

देव दानव संवादे मथ्यमाने महोदधौ।

उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम्।

त्वत्तोये सर्व तीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।

त्वयि तिष्ठान्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः।

शिवः स्वयं त्वमेवासित्, विष्णु त्वं च प्रजापतिः।

आदित्या वसवो रूद्रा विश्वे देवा स पैतृकाः।

त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः काम फल प्रदाः।

त्वत्प्रसादादिमां पूजां कर्तुमीहे जलोद्भव।

सांनिध्यं कुरुमे देव प्रसन्नो भव सर्वदा॥

ॐ अपां पतये वरुणाय नमः। प्रार्थना पूर्वक नमस्कारं करोमि॥

षोडश मातृका पूजन।

१६ आत्मनः कुल देवता	१२ लोक मातरः	८ देव सेना	४ मेधा
१५ तुष्टिः	११ मातरः	७ जया	३ शची
१४ पुष्टिः	१० स्वाहा	६ विजया	२ पद्मा
१३ धृतिः	९ स्वधा	५ सावित्री	१ गौरी गणेश

कोष्टक में दिखाये क्रम से ही मातृकाओं का पूजन होता है, हाथ में अक्षत पुष्प लेकर नाम मन्त्रों से प्रत्येक कोष्टक में आवाहन - स्थापन करते जायें।

१ - ॐ गणपतये नमः गणपति मावाहयामि, स्थापयामि ॥

१ - ॐ गौर्यै नमः गौरी मावाहयामि, स्थापयामि ॥

२ - ॐ पद्मायै नमः पद्मा मावाहयामि, स्थापयामि ॥

३ - ॐ शच्यै नमः शची मावाहयामि, स्थापयामि ॥

४ - ॐ मेधायै नमः मेधा मावाहयामि, स्थापयामि ॥

५ - ॐ सावित्र्यै नमः सावित्री मावाहयामि, स्थापयामि ॥

६ - ॐ विजयायै नमः विजया मावाहयामि, स्थापयामि ॥

७ - ॐ जयायै नमः जया मावाहयामि, स्थापयामि ॥

८ - ॐ देव सेनायै नमः देव सेना मावाहयामि, स्थापयामि ॥

९ - ॐ स्वधायै नमः स्वधा मावाहयामि, स्थापयामि ॥

१० - ॐ स्वाहायै नमः स्वाहा मावाहयामि, स्थापयामि ॥

११ - ॐ मातृभ्यो नमः मातृ मावाहयामि, स्थापयामि ॥

१२ - ॐ लोक मातृभ्यो नमः लोक मातृ मावाहयामि, स्थापयामि ॥

१३ - ॐ धृत्यै नमः धृति मावाहयामि, स्थापयामि ॥

१४ - ॐ पुष्टयै नमः पुष्टि मावाहयामि, स्थापयामि ॥

१५ - ॐ तुष्टयै नमः तुष्टि मावाहयामि, स्थापयामि ॥

१६ - ॐ आत्मनः कुलदेवतायै नमः आत्मनः कुलदेवता मावाहयामि,स्थापयामि ॥

ॐ गणेश सहित गौर्यादि षोडश मातृकाभ्यो नमः। आवाहिते कर्मणि पाद्यार्घ्यम आचमनीय, वस्त्रोपवस्त्र, धूप, दीप, नैवेद्य, ऋतुफलादीन् समर्पयामि नमस्करोमि।

इतने उपचार कर हाथ में पुष्प ले प्रार्थना करें।

ॐ गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया।

देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोक मातरः।

धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिरात्मनः कुलदेवता।

गणेशेनाधिका ह्येता वृद्धौ पूज्याश्च षोडशः॥

नवग्रह मण्डल पूजन॥

ईशान **पूर्व** **अग्नि**

N.E **East** **S.E**

ब्रह्मा इन्द्र		
विष्णु विष्णु **४ – बुध**	इन्द्राणी इन्द्र **६ – शुक्र**	आप उमा **२ – चन्द्र**
इन्द्र ब्रह्मा **५ – गुरु**	अग्नि ईश्वर **१ – सूर्य**	पृथ्वी स्कन्द **३ – मंगल**
ब्रह्मा चित्रगुप्त **९ – केतु**	प्रजापति यम **७ – शनि**	सर्प काल **८ – राहु**

उत्तर **दक्षिण**

North **South**

कुबेर **यम**

वायुव्य **पश्चिम** **नैऋत्य**

N.W **West** **S.W**

सूर्य का आवाहन करें – सूर्य – रवी (SUN)(Centre) मध्य में गोलाकार – लाल।

ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्न मृतं मर्त्यञ्च।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सूर्याय नमः श्री सूर्य मावाहयामि स्थापयामि।

चन्द्रमाँ का आवाहन करें – चन्द्र (MOON)(S.E.) अग्निकोण में – श्वेत।

ॐ इमं देवा असपत्न ꣳ सुवध्वं महते क्षत्राय महते जेष्ठ्याय महते जानराज्याय इन्द्रस्येन्द्रियाय। इममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोऽमी, राजा सोमो ऽस्माकं ब्राह्मणाना ꣳ राजा॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सोमाय नमः सोम मावाहयामि स्थापयामि।

मंगल का आवाहन करें – मंगल (MARS)(South) दक्षिण में – लाल।

ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपा ꣳ रेता ꣳ सि जिन्वति॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भौमाय नमः भौम मावाहयामि स्थापयामि।

बुध का आवाहन करें – बुध (MERCURY)(N.E.) ईशान में – हरा।

ॐ उद्बुध्य स्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टा पूर्ते स ꣳ सृजेथामयं च। अस्मिन्त् सधस्थे अध्युत्त रस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत॥

ॐ भूर्भुवः स्वः बुधाय नमः बुध मावाहयामि स्थापयामि।

गुरु का आवाहन करें – बृहस्पति (JUPITER)(North) उत्तर में – पीला।

ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद् द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋृत प्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्।

ॐ भूर्भुवः स्वः बृहस्पतये नमः बृहस्पति मावाहयामि स्थापयामि।

शुक्र का आवाहन करें – शुक्र (VENUS)(East) पूर्व में – श्वेत।

ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ꣳ शुक्र मन्धस इन्द्रस्येन्द्रिय मिदं पयोऽमृतं मधु॥ *ॐ भूर्भुवः स्वः शुक्राय नमः शुक्र मावाहयामि स्थापयामि।*

शनि का आवाहन करें – शनि (SATURN)(West) पश्चिम में – नीला।

ॐ शंनो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि श्रवन्तु नः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः शनैश्चराय नमः शनि मावाहयामि स्थापयामि।

राहुका आवाहन करें – राहु (NORTH NODE)(S.W.) नैर्ऋत्य में – काला।

ॐ कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधाः सखा। कया शचिष्ठया वृता॥

ॐ भूर्भुवः स्वः राहवे नमः राहु मावाहयामि स्थापयामि।

केतु का आवाहन करें – केतु (SOUTH NODE)(N.W.) वायव्य में – काला।

ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशो मर्या अपेश से। समुषद्भिरजायथाः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः केतवे नमः केतु मावाहयामि स्थापयामि।

अधि देवता आवाहन– **नवग्रह मण्डल मे देखें**

ॐ त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं। उर्वा रुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥

एहयेहि विश्वेश्वर नस्त्रिशूल कपाल खट्वांग धरेण सार्धम्।

लोकेश यक्षेश्वर यज्ञ सिद्धयै गृहाण पूजां भगवन् नमस्ते॥

ईश्वराय नमः।	उमाय नमः।	स्कन्दाय नमः।
विष्णवे नमः।	ब्रह्मणे नमः।	इन्द्राय नमः।
यमाय नमः।	कालाय नमः।	चित्रगुप्ताय नमः।

ॐ भूर्भुवः स्वः अधि देवताभ्यो नमः आवाहयामि स्थापयामि ॥

प्रत्यधि देवता आवाहन– **नवग्रह मण्डल मे देखें**

ॐ अग्ने नय सुपथाराये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।

युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नम उक्तिं विधेम स्वाहा।

अग्नये नमः । अद्भ्यो नमः। पृथिव्यै नमः।

विष्णवे नमः। इन्द्राय नमः। इन्द्राण्यै नमः।

प्रजापतये नमः। सर्पेभ्यः नमः। ब्रह्मणेभ्यो नमः।

ॐ भूर्भुवः स्वः प्रत्यधि देवताभ्यो नमः आवाहयामि स्थापयामि ॥

पञ्च लोकपाल आवाहन- **नवग्रह मण्डल मे देखें**

नमो गणेभ्यो गणपति भ्यश्चवो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्चवो नमो नमो

ग्रित्सेभ्यो ग्रित्सपति भ्यश्चवो नमो नमो विरुपेभ्यो विश्वरुपेभ्यश्चवो नमः ॥

गणपतये नमः। दुर्गायै नमः। वायवे नमः।

आकाशाय नमः। शिवाय नमः।

ॐ भूर्भुवः स्वः पञ्चलोकपाल देवताभ्यो नमः आवाहयामि स्थापयामि ॥

दश दिग्पाल आवाहन- **नवग्रह मण्डल मे देखें**

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ꣳ हवे हवे सुहव ꣳ शूरमिन्द्रं ह्वयामि।

शक्रम्पुरुहूतमिन्द्र ꣳ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः॥

इन्द्राय नमः। अग्नये नमः। यमाय नमः।

निर्ऋतये नमः। वरुणाय नमः। वायवे नमः।

आकाशाय नमः। ईशानाय नमः। ब्रह्मणे नमः।

अनन्ताय नमः ।

ॐ भूर्भुवः स्वः दशदिक्पाल देवताभ्यो नमः आवाहयामि स्थापयामि ॥

॥ क्षेत्रपाल देवता ॥

ॐ भ्राजच्चन्द्र जटाधरं त्रिनयनं नीलां जनाद्रिप्रभं।

दोर्दण्डान्त गदा कपाल मरुणं स्त्रग्गन्ध वस्त्रावृतम् ॥

धण्टा धुर्धुरु मेखलाध्वनि लसज्झंकार भीमं विभुं ।

वन्दे संहित सर्प कुण्डलधरं श्री क्षेत्रपालं सदा ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः क्षेत्रपाल देवताभ्यो नमः ॥ क्षेत्रपालं आवाहयामि स्थापयामि ॥

॥ वास्तु देवता ॥

ॐ वास्तोष्पते प्रति जानीह्यस्मान्त्स्वावेशो ऽअनमीवो भवो नः ।

यस्त्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदेशञ्चतुष्पदे ।

वास्तु पुरुषाय नमः ॥ *ॐ भूर्भुवः स्वः वास्तु देवताभ्यो नमः आवाहयामि स्थापयामि ॥*

इस प्रकार आवाहन के बाद हाथ में अक्षत लेकर मण्डल पर छोड़ते हुये निम्नोक्त मन्त्र से भावना करें कि मन्त्र बल से ग्रह साक्षात जीवन्त हो कर यहां उपस्थित हो रहे हैं ॥

ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञ मिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ꣳ समिमं दधातु ।

विश्वेदेवा स इह मादयन्तामों – ३ प्रतिष्ठः ॥ *ॐ भूर्भुवः स्वः आवाहित सूर्यादि नवग्रह मण्डल देवेभ्यो नमः ॥*

प्राण प्रतिष्ठा के बाद पूर्वोक्त क्रमानुसार पञ्चोपचार अथवा षोडशोपचार पूजन कर निम्न प्रार्थना बोलनी चाहिए ॥

॥ नवग्रह प्रार्थना ॥

ॐ ब्रह्मा मुरारी स्त्रिपुरान्तकारी, भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च ।

गुरूश्च शुक्रः शनि राहु केतवः, सर्वे ग्रहाः शान्ति करा भवन्तु ॥

सूर्यः शौर्य मथेन्दु रुच्च पदवीं, संमङ्गलं मङ्गलः ।

सद्बुद्धिं च बुधो गुरूश्च गुरुतां, शुक्रः सुखं शं शनिः ।

राहुर्बाहु बलं करोतु सततं, केतुः कुलस्योन्नतिं।

नित्यं प्रीति करा भवन्तु मम ते, सर्वे ऽनुकूला ग्रहाः॥

कृतेन अनेन पूजनेन, सूर्यादि नवग्रहाः प्रियन्तां न मम्॥ बोलो सूर्यादि नवग्रह देव की जय॥

॥ सर्वदेव प्रार्थना ॥

यं शैवा समुपासते शिव इति ब्रह्मेति वेदान्ति नो।

बौद्धा बुद्ध इति प्रमाण पटवः कर्तेति नैय्यायिका॥

अर्हन्नित्य थ जैन शासनरता कर्मेति मीमांसका।

सो ऽयं वो विदधातु वाँछित फलं त्रैलोक्य नाथो हरिः॥

अनेन अस्माभिकृतेन पूजनेन गणपत्याद्यावाहिता देवताः सन्तुष्टाः वरदाः शान्तिदाः भवन्तु।

॥ अथ श्री सत्य नारायण पूजन विधि ॥

भगवान सत्य नारायण की पूजा स्वर्णमयी प्रतिमा अथवा शालिग्राम शिला के रूप में की जाती है। मण्डप के बीचो बीच अष्टदल कमल के ऊपर प्रधान कलश में पूर्ण पात्र रखकर उसके ऊपर प्रतिमा स्थापित की जाती है। शालिग्राम में भगवान की नित्य सन्निधि रहती है अतः उस में आवाहन प्रतिष्ठा एवं विसर्जन नहीं होता है, किन्तु धातुमयी प्रतिमा को अग्न्युत्तारण कर उसमें प्राण प्रतिष्ठा की जाती है।

॥ अग्न्युत्तारण विधि ॥

प्रतिमा अथवा यन्त्र को शुद्ध धृत से लेपन कर उसे एक बर्तन में रखें तथा उसके ऊपर दुग्ध और जल की धारा देते हुये मन्त्र बोलें -

ॐ प्राणदा अपानदा व्यानदा व्वर्चोदा व्वरिवोदाः।

अन्यास्ते अस्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्य ꣳ शिवोभव॥

॥ प्राण प्रतिष्ठा ॥

यन्त्र अथवा मूर्ति को कपड़े आदि से पोंछ कर अन्य पात्र में रखें तथा दायें हाथ से मूर्ति या यन्त्र का स्पर्श कर भावना करें कि यन्त्र आदि सजीवता को प्राप्त हो रहे हैं।

ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं हं सः।

सोऽहं अस्याः अमुकदेव प्रतिमायाः प्राणा इह प्राणाः।

ॐ आं० अस्याः अमुक अमुकदेव प्रतिमायाः जीव इह स्थितः।

ॐ आं० अस्याः अमुक अमुकदेव प्रतिमायाः सर्वेन्द्रियाणि

वाङ्मनस्त्वक् चक्षुः श्रोत्र जिह्वा। घ्राणपाणिपाद पायूपस्थानि इहै

वागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा॥

हाथ में पुष्प लेकर भावना करें की मूर्ति या यन्त्र सजीवता को प्राप्त हो रही है।

ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञ मिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ꣳ समिमं दधातु। विश्वेदेवा स इह मादयन्तामों - २ प्रतिष्ठः॥

॥ आवाहनम्॥ ॐ सहस्र शीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।

स भूमि ꣳ सर्वतस्पृत्वा ऽ त्यतिष्ठ द्दशाङ्गुलम्॥

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः आवाहनम् समर्पयामि।

॥ आसनम्॥ ॐ पुरुष एवेद ꣳ सर्व यद्भूतं यच्च भव्यम्।

उतामृतत्वस्येशानो यदन्ने नाति रोहति॥

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः आसनार्थे पुष्पाणि समर्पयामि॥

॥ **पाद्यम्** ॥ ॐ एता वानस्य महिमातो ज्या याँश्च पूरुषः।

पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः पादयोर्पाद्यम समर्पयामि ॥

॥ **अर्घ्यम्** ॥ ॐ त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादो ऽस्येहाभवत् पुनः।

ततो विष्वङ्ग व्यक्रामत्साशनानशने अभि ॥

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः हस्तयोरर्घ्यम् समर्पयामि ॥

॥ **आचमनीयम्** ॥ ॐ ततो विराड़ जायत विराजो अधि पूरुषः।

स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमि मथो पुरः ॥

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः मुखे आचमनीयं जलं समर्पयामि

॥ **स्नानम्** ॥ ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्।

पशूंक्ताँश्चक्रे वायव्या नारण्या ग्राम्याश्च ये ॥

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः सर्वाङ्गे स्नानीयम् जलं समर्पयामि ॥

॥ **पय स्नानम्** ॥ ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः।

पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः दुग्ध स्नानम् समर्पयामि ॥ पुनः जल स्नानम् ॥

॥ **दधि स्नानम्** ॥ ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः।

सुरभि नो मुखा करत्प्रण आयू ꣳ षीतारिषत् ॥

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः दधि स्नानम् समर्पयामि ॥ पुनः जल स्नानम् ॥

॥ घृत **स्नानम्** ॥ ॐ घृतं घृतपावानः पिबत वसां वसा पावानः पिबतान्त रिक्षस्य

हविरसि स्वाहा । दिशः प्रदिश आदिशो विदिश उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा ॥

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः घृत स्नानम् समर्पयामि ॥ पुनः जल स्नानम् ॥

॥ **मधु स्नानम्** ॥ ॐ मधुवाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः माध्वीर्नः सन्तोषधीः । मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव ꣳ रजः ।मधु द्यौरस्तु नः पिता ।

धुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ -२ अस्तु सूर्यः । माध्वीर्गावो भवन्तु नः ॥

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः मधु स्नानं समर्पयामि ॥ पुनः जल स्नानम् ॥

॥ **शर्करा स्नानम्** ॥ ॐ अपा ꣳ रस मुद्वयस ꣳ सूर्ये सन्त ꣳ समाहितम् ।

अपा ꣳ रसस्य यो रसस्तं वो गृहणाम्युत्तम मुपयाम गृहीतो ।

ऽ सीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णामेष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम् ॥

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः शर्करा स्नानम् समर्पयामि ॥ पुनः जल स्नानम् ॥

॥ **पञ्चामृत स्नानम्** ॥ ॐ पञ्चनद्यः सरस्वती मपि यन्ति सस्रोतसः ।

सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित् ॥

*पयो दधि घृतं चैव, मधुं च शर्करयान्वितं । **पञ्चामृतं** मयानीतं, स्नानार्थम् प्रतिगृह्यताम् ॥* *ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः **पञ्चामृत** स्नानं समर्पयामि ॥ पुनः जल स्नानम् ॥*

॥ **शुद्धोदक स्नानम्** ॥ ॐ शुद्धवालः सर्व शुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः ।

ॐ शुद्धवालः सर्व शुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः ।

श्येतः श्येताक्षो ऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णायामा

अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः ॥

शुद्धं यत्सलिलं दिव्यं । गङ्गाजलसमं स्मृतम् । समर्पितं मया भक्तया । स्नानार्थम् प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि ॥

॥ वस्त्रम् ॥ ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत s ऋचः सामानि जज्ञिरे ।

छन्दा ꣳसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्माद जायत ॥

शीतवातोष्ण संत्राणं लज्जाया रक्षणं परम् । देहालङ्करणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥ *ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः वस्त्रं समर्पयामि ॥*

उपवस्त्रम् ॥

उपवस्त्रं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने । भक्तूया समर्पितं देव प्रसीद परमेश्वर ॥

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः उपवस्त्रं समर्पयामि ॥

॥ आभूषणम् ॥

वज्रमाणिक्य वैदूर्य मुक्तां विद्रुम मण्डितं । पुष्पराग समायुक्तं भूषणं प्रतिगृह्यताम् ॥ *ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः आभूषणं समर्पयामि ॥*

॥ यज्ञोपवीतम् ॥ ॐ तस्मादश्वा अजायन्त ये केचो भयादतः ।

गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्मा ज्जाता अजावयः ॥

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि ॥

॥ गन्धम् ॥ ॐ तं यज्ञं वर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः ।

तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये ॥

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः । गन्ध स्नानं समर्पयामि ॥

॥ चन्दनम् ॥ श्री खण्ड चन्दनं दिव्यं, गन्धाढयं सुमनोहरम् ।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ, चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः चन्दनं समर्पयामि ॥

॥ सिन्दूरम् ॥ सिन्दूर मरुणाभासं, जपा कुसुम संनिभं ।
अर्पितं ते मया भक्तया, प्रसीद परमेश्वर ॥

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः सिन्दूरं समर्पयामि ॥

॥ नाना परिमल द्रव्य ॥ ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुँ ज्यायाहेति परिवाधमानः
हस्तध्नो विश्वा वयुनानि विद्वान् पुमान् पुमा ꣳ संपरिपातु विश्वतः ॥

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः नाना परिमल द्रव्याणि समर्पयामि ॥

॥ अक्षतान् ॥ ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यवप्रिया अधूषत ।
अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठयामती योजा न्विन्द्र ते हरी ॥ अक्षताँश्च सुरश्रेष्ठा, कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः ।
मया निवेदिता भक्तया, गृहाण परमेश्वर ॥

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः अक्षताँ समर्पयामि ॥

ध्यान रहेः शालिग्राम पर अक्षत नहीं चढ़ाए जाते हैं । अतः श्वेत तिल अथवा कुंकुमाक्त अक्षत अर्पित करें ।

॥ पुष्प माला ॥ ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्।

मुखं किमस्यासीत् किंबाहू किमुरू पादा उच्येते॥

माल्यादीनि सुगंधीनि, मालत्यादीनि वै प्रभो। मयानीतानि पुष्पाणि, गृहाण परमेश्वर॥

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः पुष्पाणि पुष्पमालां समर्पयामि॥

॥ तुलसी पत्रम्॥ ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्।

समूढ मस्य पा ꣳ सुरे स्वाहा॥

तुलसीं हेमरुपां च रत्नरूपां च मञ्जरीम्। भव मोक्ष प्रदां तुभ्यमर्पयामि हरि प्रियाम्॥

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः तुलसी दलं समर्पयामि॥

॥ दूर्वाङ्कुरान्॥ ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।

एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्त्रेण शतेन च॥

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि॥

॥ सुगंधित तैलम्॥ ॐ त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं।

उर्वा रुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥

तैलानि च सुगंधीनि द्रव्याणि विविधानि च। मया दत्तानि लेपार्थं गृहाण परमेश्वर॥

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः सुगन्धित तैलं समर्पयामि॥

॥ अंग पूजनम्॥ पूजा के क्रम मे भगवान के प्रत्येक अंग की पूजा की जाती है। तिल से,चावलों से, फूल से अथवा विशेष वस्तु को भगवान के सामने अर्पण करते हुये निम्न मन्त्रों से पदार्थ चढायें ॥

ॐ अच्युताय नमः पादौ पूजयामि।

ॐ नारायणाय नमः जंघे पूजयामि।

ॐ केशवाय नमः गुल्फौ पूजयामि ।

ॐ रामाय नमः ऊरुं पूजयामि ।

ॐ कृष्णाय नमः मेढ्रं पूजयामि ।

ॐ नृसिंहाय नमः नाभिं पूजयामि ।

ॐ दामोदराय नमः हृदयं पूजयामि ।

ॐ जनार्दनाय नमः कण्ठं पूजयामि ।

ॐ श्रीधराय नमः हस्तान् पूजयामि ।

ॐ वाचस्पतये नमः मुखं पूजयामि ।

ॐ जगन्नाथाय नमः ललाटं पूजयामि ।

ॐ सर्वात्मने नमः शिरः पूजयामि ।

ॐ सत्य नारायणाय नमः सर्वांणि अंगानि पूजयामि ।

॥ धूपम् ॥ ॐ ब्रह्मणो ऽस्य मुख मासीद् वाहू राजन्यः कृतः ।
ऊरुतदस्य यद्वैश्यः पद्भ्या ँ शूद्रो अजायत् ॥
वनस्पति रसोद्भूतो, गन्धाढयो गन्ध उत्तमः ।
आघ्रेयः सर्व देवानां, धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः धूपं आघ्रापयामि ॥

॥ दीपम् ॥ ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत ।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत ॥

साज्यं च वर्ति संयुक्तं, वाह्निना योजितं मया। दीपं गृहाण देवेश, त्रैलोक्य तिमिरापहम्॥ *ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः प्रत्यक्ष दीपं दर्शयामि॥*

दीपक दिखाकर हाथ धोलें तथा नैवेद्य भगवान के सामने रखकर तुलसी दल डालें।

॥ नैवेद्यम्॥ ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्ष ꣳ शीर्ष्णोद्यौः समवर्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकां २ अकल्पयन्॥

शर्करा खण्ड खाद्यानि, दधि क्षीर घृतानि च। आहारं भक्ष्य भोज्यं च, नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ प्राणाय स्वाहा। *ॐ अपानाय स्वाहा।* *ॐ व्यानाय स्वाहा।*
ॐ उदानाय स्वाहा। *ॐ समानाय स्वाहा।*

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः नैवेद्यं निवेदयामि मध्ये मध्ये पानीयं समर्पयामि। पुनराचमनीयं समर्पयामि॥

॥ श्याम रसिया मेरे मन बसिया रुचि रुचि भोग लगाओ रसिया॥

१॥ दुर्योधन के मेवा त्याग्यो साग विदुर घर खायो रसिया रुचि रुचि भोग –

२॥ शवरी के वेर सुदामा के तंडुल माँग माँग हरि खायो रसिया रुचि रुचि –

३॥ राधा रानी के मन मे बसगयो औरन को हर्षायो रसिया रुचि रुचि –

४॥ जो मेरे श्याम को भोग लगावे छूट जाय लख चौरसिया रुचि रुचि –

५॥ सूर श्याम बलिहारि चरण की हृदय कमल में रहो बसिया रुचि रुचि .

॥ ऋतु फलम् ॥ ॐ या फलिर्नि या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः ।

बृहस्पति प्रसूतास्तां नो मुञ्चन्त्व ꣳ हसः ॥

इदं फलं मया देव, स्थापितं पुरतस्तव । तेन मे सफला वाप्तिर्भवे जन्मनि जन्मनि ॥ *ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः ऋतु फलं समर्पयामि ॥*

॥ ताम्बूलम् ॥ ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञ मतन्वत ।

वसन्तो ऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः ॥

पूगीफलं महद्दिव्यं, नागवल्ली दलैर्युतम् । एला लवङ्ग संयुक्तं, ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः एला लवङ्ग पूगीफल युत ताम्बूलं समर्पयामि ॥

हस्तौ प्रक्षाल्य -*हृशीकेशाय नमः ॥*

॥ द्रव्य दक्षिणा ॥ ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्यजातः पतिरेक आसीत् ।

सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥

दक्षिणा प्रेमसंयुक्ता, यथाशक्ति समर्पिता । अनन्त फलदामेमां, गृहाण परमेश्वर ॥

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः पूजाया षाड्गुण्यार्थे द्रव्य दक्षिणां समर्पयामि ॥

ॐ शुक्लां वरधरं विष्णुं शशि वर्ण चतुर्भुजं ।

प्रसन्न वदनं ध्यायेत् सर्व विघ्नोप शान्तये ॥

श्री सत्य नारायण अर्चना -

जिस प्रकार भगवान शंकर को अभिषेक भगवती देवी को हवन प्रिय है उसी प्रकार भगवान विष्णु को अर्चना प्रिय है। अर्चना चावलों या फूल की-

पंखुड़ियों के द्वारा अथवा सिक्कों से भी की जाती है। एक एक मन्त्र के साथ नमः बोलते हुए अर्च्य द्रव्य भगवान के चरणों में समर्पित करना चाहिए॥

॥ अर्चना - ॥ सत्य नारायण शत नामावलि ॥

१	ॐ सत्य देवाय नमः।	२	ॐ सत्य आत्मने नमः।
३	ॐ सत्य भूताय नमः।	४	ॐ सत्य पुरुषाय नमः।
५	ॐ सत्य नाथाय नमः।	६	ॐ सत्य साक्षिणे नमः।
७	ॐ सत्य योगाय नमः।	८	ॐ सत्य ज्ञानाय नमः।
९	ॐ सत्य ज्ञान प्रियाय नमः।	१०	ॐ सत्य निधने नमः।
११	ॐ सत्य सम्भवाय नमः।	१२	ॐ सत्य प्रभुवे नमः।
१३	ॐ सत्ये श्वराय नमः।	१४	ॐ सत्य कर्मणे नमः।
१५	ॐ सत्य पवित्राय नमः।	१६	ॐ सत्य मंगलाय नमः।
१७	ॐ सत्य गर्भाय नमः।	१८	ॐ सत्य प्रजापतये नमः।
१९	ॐ सत्य विक्रमाय नमः।	२०	ॐ सत्य सिद्धाय नमः।

२१	ॐ सत्याच्युताय नमः।	२२	ॐ सत्य वीराय नमः।
२३	ॐ सत्य बोधाय नमः।	२४	ॐ सत्य धर्माय नमः।
२५	ॐ सत्या ग्रजाय नमः।	२६	ॐ सत्य संतुष्टाय नमः।
२७	ॐ सत्य वराहाय नमः।	२८	ॐ सत्य परायणाय नमः।
२९	ॐ सत्य पूर्णाय नमः।	३०	ॐ सत्य औषधाय नमः।
३१	ॐ सत्य शाष्वताय नमः।	३२	ॐ सत्य प्रवर्धनाय नमः।
३३	ॐ सत्य विभवे नमः।	३४	ॐ सत्य ज्येष्ठाय नमः।
३५	ॐ सत्य श्रेष्ठाय नमः।	३६	ॐ सत्य विक्रमिणे नमः।
३७	ॐ सत्य धन्विने नमः।	३८	ॐ सत्य मेधाय नमः।
३९	ॐ सत्याधीशाय नमः।	४०	ॐ सत्य क्रतवे नमः।
४१	ॐ सत्य कालाय नमः।	४२	ॐ सत्य वत्सलाय नमः।
४३	ॐ सत्य वसवे नमः।	४४	ॐ सत्य मेधाय नमः।
४५	ॐ सत्य रूद्राय नमः।	४६	ॐ सत्य ब्रह्मणे नमः।
४७	ॐ सत्य अमृताय नमः।	४८	ॐ सत्य वेदागांय नमः।
४९	ॐ सत्य चतुरात्मने नमः।	५०	ॐ सत्य भोक्त्रे नमः।
५१	ॐ सत्य शुचये नमः।	५२	ॐ सत्यार्जिताय नमः।
५३	ॐ सत्येंद्राय नमः।	५४	ॐ सत्य संगराय नमः।
५५	ॐ सत्य स्वर्गाय नमः।	५६	ॐ सत्य नियमाय नमः।
५७	ॐ सत्य मेधाय नमः।	५८	ॐ सत्य वेद्याय नमः।

५९	ॐ सत्य पीयूषाय नमः।	६०	ॐ सत्य मायाय नमः।
६१	ॐ सत्य मोहाय नमः।	६२	ॐ सत्य सुरानंदाय नमः।
६३	ॐ सत्य सागराय नमः।	६४	ॐ सत्य तपसे नमः।
६५	ॐ सत्य सिधांय नमः।	६६	ॐ सत्य मृगाय नमः।
६७	ॐ सत्य लोकपालकाय नमः।	६८	ॐ सत्य स्थिताय नमः।
६९	ॐ सत्य दिक्पालकाय नमः।	७०	ॐ सत्य धनुर्धराय नमः।
७१	ॐ सत्याम्बुजाय नमः।	७२	ॐ सत्य वाक्याय नमः।
७३	ॐ सत्य गुरवे नमः।	७४	ॐ सत्य न्यायाय नमः।
७५	ॐ सत्य साक्षिणे नमः।	७६	ॐ सत्य संबृताय नमः।
७७	ॐ सत्य सम्प्रदाय नमः।	७८	ॐ सत्य वहनये नमः।
७९	ॐ सत्य वायुवे नमः।	८०	ॐ सत्य शिखराय नमः।
८१	ॐ सत्य आनंदाय नमः।	८२	ॐ सत्य आधिराजाय नमः।
८३	ॐ सत्य श्रीपादाय नमः।	८४	ॐ सत्य गुह्याय नमः।
८५	ॐ सत्योदराय नमः।	८६	ॐ सत्य ह्रदयाय नमः।
८७	ॐ सत्य कमलाय नमः।	८८	ॐ सत्य नालाय नमः।
८९	ॐ सत्य हस्ताय नमः।	९०	ॐ सत्य बाहवे नमः।
९१	ॐ सत्य मुखाय नमः।	९२	ॐ सत्य जिह्वाय नमः।
९३	ॐ सत्य दौंष्ट्राय नमः।	९४	ॐ सत्य नाशिकाय नमः।
९५	ॐ सत्य श्रोत्राय नमः।	९६	ॐ सत्य चक्षसे नमः।

९७	ॐ सत्य शिरसे नमः।	९८	ॐ सत्य मुकुटाय नमः।
९९	ॐ सत्यांबराय नमः।	१००	ॐ सत्याभरणाय नमः।
१०१	ॐ सत्यायुधाय नमः।	१०२	ॐ सत्य श्रीबल्लभाय नमः।
१०३	ॐ सत्य गुप्ताय नमः।	१०४	ॐ सत्य पुष्कराय नमः।
१०५	ॐ सत्याधृिदाय नमः।	१०६	ॐ भामावतारकाय नमः।
१०७	ॐ सत्य गृह रूपिणे नमः।	१०८	ॐ सत्य प्रहरणायुधाय नमः।

॥ इति सत्य नारायण शत नामावलिः ॥

108 Names of Lord Satya Narayana

Lord Satya Narayana is another form of Lord Vishnu, who is commonly worshipped by Hindus, usually on a full moon day of the month. A Narayan form of Lord Vishnu is considered an embodiment of truth. In the puja called Satyanarayana Pooja, people worship by reciting the gracious story of Lord Satyanarayana. Many people carry out this puja immediately after or along with an auspicious occasion or any success in life.

1. Om Satya devay Namaha	2. Om Satyatmane Namaha
3. Om Satya bhootay Namaha	4. Om Satya purushay Namaha
5. Om Satya nathay Namaha	6. Om Satya saxiNe Namaha
7. Om Satya yogay Namaha	8. Om Satya gyanay Namaha
9. Om Satya gyanapriyay Namah	10. Om Satya nidhaye Namaha
11. Om Satya sambhavay Namaha	12. Om Satya prabhuve Namaha

13. Om Satyeshwaraya Namaha	14. Om Satya karmaNe Namaha
15. Om Satya pavitray Namaha	16. Om Satya maNgalay Namaha
17. Om Satya garbhay Namaha	18. Om Satya prajapataye Namaha
19. Om Satya vikramay Namaha	20. Om Satya siddhay Namaha
21. Om Satyachyutay Namaha	22. Om Satya veeray Namaha
23. Om Satya bodhay Namaha	24. Om Satya dharmay Namaha
25. Om Satyagrajaay Namaha	26. Om Satya saNtushthay Namaha
27. Om Satya varahay Namaha	28. Om Satya paraayanaay Namaha
29. Om Satya poornay Namaha	30. Om Satya aushadhay Namaha
31. Om Satya shashvatay Namaha	32. Om Satya pravardhanay Namaha
33. Om Satya vibhave Namaha	34. Om Satya jyeshthay Namaha
35. Om Satya shreshthay Namaha	36. Om Satya vikramiNe Namaha
37. Om Satya dhanvine Namaha	38. Om Satya medhay Namaha
39. Om Satya dheeshay Namaha	40. Om Satya vatsalay Namaha
41. Om Satya kalay Namaha	42. Om Satya kratave Namaha
43. Om Satya vasave Namaha	44. Om Satya meghay Namaha
45. Om Satya rudray Namaha	46. Om Satya brahmaNe Namaha
47. Om Satya amritay Namaha	48. Om Satya vedangay Namaha
49. Om Satya chaturatmane Namaha	50. Om Satya bhoktre Namaha
51. Om Satya shuchaye Namaha	52. Om Satyarjitay Namaha
53. Om Satyendray Namaha	54. Om Satya saNgaray Namaha

55. Om Satya svargay Namaha	56. Om Satya niyamay Namaha
57. Om Satya medhay Namaha	58. Om Satya vedyay Namaha
59. Om Satya peeyushay Namaha	60. Om Satya mayay Namaha
61. Om Satya mohay Namaha	62. Om Satya surananday Namaha
63. Om Satya sagaray Namaha	64. Om Satya tapase Namaha
65. Om Satya siNhay Namaha	66. Om Satya mrigay Namaha
67. Om Satya lokapalakay Namaha	68. Om Satya sthitay Namaha
69. Om Satya dikpalakay Namaha	70. Om Satya dhanurdharay Namaha
71. Om Satyambujay Namaha	72. Om Satya vakyay Namaha
73. Om Satya gurave Namaha	74. Om Satya nyayay Namaha
75. Om Satya saxiNe Namaha	76. Om Satyasa.NvrItaya Namaha
77. Om Satya sampraday Namaha	78. Om Satya vahnaye Namaha
79. Om Satyavayuve Namaha	80. Om Satyashikharaya Namaha
81. Om Satya ananday Namaha	82. Om Satya adhirajay Namaha
83. Om Satya shripaday Namaha	84. Om Satya guhyay Namaha
85. Om Satyodaraay Namaha	86. Om Satya hridayay Namaha
87. Om Satya kamalay Namaha	88. Om Satya nalay Namaha
89. Om Satya hastay Namaha	90. Om Satya baahave Namaha
91. Om Satya mukhay Namaha	92. Om Satya jihvay Namaha
93. Om Satya dauNshtray Namaha	94. Om Satya nashikay Namaha
95. Om Satya shrotray Namaha	96. Om chakshase Namaha

97. Om Satya shirse Namaha	98. Om Satya shirase Namaha
99. Om Satya mukutay Namaha	100. Om Satya mbaray Namaha
101.Om Satya bharanay Namaha	102.Om Satyayudhay Namaha
103.Om Satya shri vallabhay Namaha	104.Om Satya guptay Namaha
105.Om Satya pushkaray Namaha	106.Om Satya dhriday Namaha
107. Om Satya grih roopiNe Namah	108.Om Satya praharaNayudhay Namah

ॐ नमो ऽस्त्वनन्ताय सहस्त्र मूर्तये सहस्त्र पादाक्षि शिरो रूबाहवे ।

सहस्त्र नाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्त्र कोटी युग धारिणे नमः ॥

संक्षिप्त वैदिक आरती ॥

सर्व प्रथम चरणों में **चार बार,** नाभि में **दो बार,** मुख मण्डल में **एक बार,** आरती करने के बाद समस्त अंगों की सात बार आरती होती है । फिर शंख में रखे हुवे जल को भगवान के चारो ओर घुमा कर उन्हें निवेदित करना चाहिए ॥

मन्त्रः- ॐ इद्ꣳ हविः प्रजननं मे अस्तु दशवीरꣳ सर्वगणꣳ स्वस्तये ।
आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभय सनि ।
अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयोरेतो अस्मासु धत्त ॥
ॐ श्री सत्य नारायण आरार्तिक्यं समर्पयामि ॥

॥ स्तुति प्रार्थना ॥

हाथ में पुष्प लेकर प्रार्थना करें।

ॐ शान्ताकारं भुजग शयनं, पद्मनाभं सुरेशम्।

विश्वाधारं गगनसदृशं, मेघवर्णम् शुभांगम्।

लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं, योगिभिर्ध्यान गम्यम्।

वन्दे विष्णुं भवभय हरं, सर्व-लोकैक नाथम्॥

विशेष – यदि मात्र पूजन हो तो यहीं पर मन्त्र पुष्पाञ्जलि करनी चाहिए।

॥ पुस्तक पूजा ॥

या कुन्देन्दु तुषार हार धवला, या शुभ्र वस्त्रावृता।

या वीणा वर दण्ड मण्डित करा, या श्वेत पद्माशना॥

या ब्रह्माच्युत शंकर प्रभृतिर्भि देवै सदा वन्दिता।

सामां पातु सरस्वती भगवती, निश्शेष जाड्यापहा॥

श्री सरस्वत्यै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि॥

॥ व्यास पूजनम्॥

नमोस्तुते व्यास विशालबुद्धे फुल्लार विन्दायतप त्रिनेत्र।

येन त्वया भारततैल पूर्ण प्रज्बालितो ज्ञानमय प्रदीपः॥

Here is an example how to set up the puja Mandap ॥

मंगला चरण ॥

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।
नागाननाय श्रुतियज्ञ विभूषिताय गौरी सुताय गणनाथ नमो नमस्ते ॥

यो ऽन्तः प्रविश्य ममवाच मिमां प्रसुप्ताम्।
सञ्जीवयत्यखिल शक्तिधर स्व धाम्ना ॥

अन्याश्च हस्त चरणौ श्रवण त्वगादीन्।
प्राणान्नमो भगवते पुरुषाय तुभ्यम् ॥

तत्रैव गङ्गा यमुना त्रिवेणी गोदावरी सिन्धु सरस्वती च।
सर्वाणि तीर्थानि वसन्ति तत्र यत्राच्युतोदार कथा प्रसंगः ॥

नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम्।

देविं सरस्वतीं व्यासं ततो जय मुदीरयेत्॥

यं शैवा समुपासते शिव इति ब्रह्मेति वेदान्ति नो।

बौद्धा बुद्ध इति प्रमाण पटवः कर्तेति नैय्यायिका॥

अर्हन्नित्य थ जैन शासनरता कर्मेति मीमांसका।

सो ऽयं वो विदधातु वाँछित फलं त्रैलोक्य नाथो हरिः॥

ॐ तत्सत श्री नारायण तू पुरुषोत्तम गुरु तू।

सिद्ध बुद्ध तू स्कन्द विनायक सविता पावक तू।

रुद्र विष्णु तू राम कृष्ण तू रहीमताओ तू।

वासुदेव गो विश्वरुप तू चिदानन्द हरि तू॥

अद्वितीय तू अकाल निर्भय आत्म लिंग शिव तू॥

श्री सत्य नारायण व्रत कथा (हिन्दी)

॥ पूजन विधि ॥

व्रत करने वाला पूर्णिमा, संक्रान्ति या एकादशी के दिन, शाम को स्नान आदि से निवृत्त हो कर, पूजा स्थान में आसन पर बैठ कर श्री गणेश, गौरी, वरुण, विष्णु आदि सब देवतावों का ध्यान करके पूजन करे और संकल्प करे कि, मैं सत्य नारायण स्वामी का पूजन तथा कथा श्रवण करुंगा। पुष्प हाथों में लेकर श्री सत्य- नारायण का पूजन करे। पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य आदि से युक्त होकर स्तुति करें।

हे भगवान, मैं ने श्रद्धा पूर्वक फल, जल आदि सब सामाग्री आप को अर्पण की है इसे आप स्वीकार कीजिये। आपदाओं से मेरी रक्षा कीजिये। मेरा आप को बारम्बार नमस्कार है। इसके बाद श्री सत्य नारायण स्वामी का पूजन करें पश्चात कथा श्रवण करें।

॥ पहला अध्याय ॥

एक समय नैमीशारण्य तीर्थ में सौनक आदि अठ्ठासी हजार ऋषियों ने श्री सूत जी से पूछा, हे प्रभु, इस कलयुग में वेद विद्या से रहित मनुष्यों को भक्ति किस प्रकार मिलेगी तथा उनका उद्धार कैसे होगा। इस लिये, हे मुनि श्रेष्ठ, कोई ऐसा तप व व्रत कहिये जिससे थोड़े ही समय में पुण्य प्राप्त हो तथा मनो वांछित फल मिले। **सर्व शास्त्र ज्ञाता, श्री सूतजी बोलेः-** हे वैष्णवों में पूज्य, आप सब ने सर्व प्राणियों के हित की बात पूछी है। अब मैं उस श्रेष्ठ व्रत को आप लोगों से कहूँगा, जिस व्रत को नारद जी ने भगवान नारायण से पूछा था और श्री लक्ष्मी पती ने, मुनि श्रेष्ठ नारद जी से कहा था। उसे ध्यान से सुनिये। एक समय योगी राज नारद जी दूसरों के हित की इच्छा से अनेक लोकों में घूमते हुवे मृत्यु लोक में आ पहुंचे। वहां बहुत योनियों में जन्मे हुवे प्राय सभी मनुष्यों को अपने कर्मों के द्वारा अनेक दुखों से पीड़ित देख कर किस यत्न को करने से निश्चय ही इनके दुखों का नाश हो सकेगा ऐसा मन में सोच कर विष्णु लोक को गये। वहां श्वेत वर्ण और चार भुजावों वाले देवों के ईश नारायण को (जिनके हाथों में शङ्ख, चक्र, गदा और पद्म थे, तथा वनमाला पहने हुवे थे) देखकर

स्तुति करने लगे। हे भगवान, आप अत्यन्त शक्ति से भरपूर हैं। मन तथा वाणी भी आप को नही पा सकती, आप का आदि, मध्य और अंत नहीं है। आप निर्गुण स्वरूप, श्रृष्टी के आदि भूत एवं भक्तों के दुखों को नष्ट करने वाले हैं। आप को मेरा नमस्कार है। नारद जी से इस प्रकार स्तुति सुन कर विष्णु भगवान बोले कि हे मुनि श्रेष्ठ, आपके मन में क्या है। आप का यहां किस काम के लिये आगमन हुवा है, निसंकोच कहिये। तब नारद मुनि बोले, मृत्यु लोक में सभी मनुष्य, अपने अपने कर्मों के अनुसार अनेक प्रकार के दुखों से दुखी हो रहे हैं। हे नाथ, मुझ पर दया रखते हैं तो बतलाइये कि उन मनुष्यों के सब दुख थो. डे ही प्रयत्न से कैसे दूर हो सकते हैं। श्री विष्णु भगवान बोले कि, हे नारद, मनुष्यों की भलाई के लिये तुमने यह बहुत अच्छी बात पूछी है। जिस काम के करने से मनुष्य मोह से छूट जाता है वह मैं कहता हूं, सुनो। बहुत पुण्य को देने वाला स्वर्ग तथा मनुष्य लोक दोनो में दुर्लभ एक व्रत है। आज मैं प्रेम वश हो कर तुमसे कहता हूं। इस व्रत को अच्छी तरह विधी से करके मनुष्य मृत्यु लोक में सुख भोग कर मरने पर मोक्ष को प्राप्त होता है। **श्री विष्णु भगवान के वचन सुनकर नारद जी ने पूछा :-** उस व्रत का क्या फल है क्या विधान है और किस ने इस व्रत को किया है और किस दिन यह व्रत करना चाहिये, कृपा करके विस्तार से बताईये।

श्री विष्णु भगवान बोले :- दुख शोक आदि को दूर करने वाला, धन धान्य को

बढ़ाने वाला, सौभाग्य तथा संतान को देने वाला, सब स्थानों पर विजय कराने वाला, श्री सत्य नारायण स्वामी का यह व्रत हैं। भक्ति और श्रद्धा के साथ किसी भी दिन, शाम के समय, बंधुओं के साथ धर्म परायण होकर, पूजा करे और भक्ति भाव से स्वयं प्रसाद लें। गेहूं का चूरण शक्कर और गुंड़ ले और सब भक्षण योग्य पदार्थ जमा करके स्वयं अर्पण करें तथा बंधुओं सहित भोजन करे। नृत्य आदि का आचरण कर श्री सत्य नारायण स्वामि का स्मरण कर समस्त समय व्यतीत करे। इस तरह का व्रत करने पर मनुष्यों की इच्छा निश्चय ही पूरी होती है। विशेष कर कलि काल में पृथ्वि पर यही मोक्ष का सरल उपाय है।

श्री सत्यनारायण व्रत कथा का प्रथम अध्याय समाप्त।

॥ दूसरा अध्याय ॥

सूतजी बोलेः- हे ऋषियों, जिन्होंने पहले इस व्रत को किया है उस इतिहास को कहता हूँ, ध्यान से सुनिये। सुन्दर काशीपुरी नगरी में एक अति निर्धन ब्राह्मण रहता था। वह भूख और प्यास से बेचैन हुवा नित्य ही पृथ्वी पर भिक्षा के हेतु घूमता था। ब्राह्मणों को प्रेम करने वाले भगवान, ब्राह्मण को दुखी देख कर बूढ़े ब्राह्मण का रूप धर कर उसके पास जाकर आदर के साथ पूछते हैंः- हे ब्राह्मण तुम नित्य दुखी हुवे पृथ्वी पर क्यों घूमते हो। हे श्रेष्ठ ब्राह्मण यह सब मुझसे

कहो। मैं सुनना चाहता हूं। ब्राह्मण बोला मैं निर्धन ब्राह्मण हूँ , भिक्षा के लिये पृथ्वी पर फिरता हूं। हे भगवान अगर आप इसका कोई उपाय जानते हो तो कृपा करके मुझसे बतावो। बृद्ध ब्राह्मण (भगवान) बोले कि सत्य नारायण भगवान, मनो वाँछित फल देने वाले हैं। इस लिये हे ब्राह्मण तुम उनका पूजन करो। जिसके करने से मनुष्य सब दुखों से मुक्त होता है। ब्राह्मण को व्रत का विधान बता कर बूढ़े ब्राह्मण का रूप धारण करने वाले सत्य नारायण भगवान अन्तर्ध्यान हो गये। निर्धन ब्राह्मण ने सोचा कि जिस व्रत को बृद्ध ब्राह्मण ने बतलाया है, मैं उसे करूंगा। यह निश्चय करने पर रात में उसको नींद भी नही आई। वह सबेरे उठा और सत्य नारायण भगवान के व्रत का संकल्प कर के भिक्षा मांगने निकला। उस दिन उसको भिक्षा में बहुत कुछ दान में मिला जिससे उसने बन्धु बान्धुओं के साथ सत्य नारायण भगवान का व्रत और पूजन किया। व्रत करने से वह ब्राह्मण दुख से छूट कर अनेक प्रकार की सम्पतियों से युक्त हुवा। उस समय से वह ब्राह्मण हर मास, सत्य नारायण भगवान का व्रत करने लगा। इस तरह आगे जो कोई पृथ्वी पर सत्य नारायण भगवान का व्रत करेगा वह सब पापों तथा दुखों से छूट कर मोक्ष को प्राप्त होगा। इस तरह नारद जी द्वारा वर्णित श्री सत्य नारायण स्वामी का यह व्रत तुमसे कहा। हे विप्रों मैं अब और क्या कहूं। ऋषि बोले :- हे मुनीश्वर संसार में इस ब्राह्मण से सुन कर किस किस ने इस व्रत को किया हम वह सब सुनना चाहते हैं, इसके लिये हमारे मन में श्रद्धा है। सूतजी बोले :- हे मुनियों, जिस जिस ने इस व्रत को किया है वह

सब सुनो। एक समय वह ब्राह्मण धन और ऐश्वर्य के अनुसार बंधु बान्धुओं के साथ श्री सत्य नारायण भगवान का व्रत करने को तैयार हुवा। उसी समय एक लकड़ी बेचने वाला गरीब वहां आया और बाहर लकड़ियों को रख कर ब्राह्मण के मकान में गया। प्यास से दुखी लकड़हारे ने ब्राह्मण को व्रत करते देखकर नमस्कार करके पूछा कि आप यह क्या कर रहे हैं और इसको करने से क्या फल मिलता है, कृपा करके मुझसे कहिये।

ब्राह्मण ने कहाः- भक्तों की सब मनोकामना पूर्ण करने वाले, यह श्री सत्यनारायण स्वामी का व्रत है। जिन की कृपा से मेरे यहां धन धान्य आदि की वृद्धि हुवी है। ब्राह्मण से इस व्रत के बारे में जानकर लकड़हारा प्रसन्न हुवा। चरणामृत और प्रसाद लेने के बाद वह अपने घर को गया। लकड़हारे ने इस प्रकार का संकल्प किया कि आज लकड़ी बेचने से जो धन मुझे मिलेगा उस से मैं श्री सत्य नारायण स्वामी का उत्तम व्रत करुंगा। यह मन में विचार कर बृद्ध लकड़हारा लकड़ियां सर पर रख कर सुन्दर नगर में गया। उस दिन वहां पर उसे उन लकड़ियों का दाम पहले से चौगुना मिला। तब वह लकड़हारा अति हर्षित होकर पके केले के फल, शक्कर, घी और दही, गेहूं का चूरण इत्यादि, श्री सत्य नारायण स्वामी के व्रत की कुल सामाग्री को लेकर अपने घर गया। फिर उसने अपने सब भाइयों को बुला कर विधी के साथ भगवान श्री सत्य नारायण स्वामी का पूजन और व्रत किया। उस व्रत को करने से गरीब लक.

डहारा धन, पुत्र आदि से युक्त हुवा और संसार के समस्त सुख भोग कर वैकुण्ठ को चला गया।

श्री सत्यनारायण व्रत कथा का दुसरा अध्याय समाप्त।

॥ तीसरा अध्याय ॥

सूतजी बोले हे मुनियों। अब आगे की कथा कहता हूं सुनो। पहले समय में उल्कामुख नाम का एक बुद्धिमान राजा था। वह सत्यवक्ता और जितेन्द्रिय था। हर दिन देव स्थानों में जाता तथा गरीबों को धन देकर उनके कष्ठ दूर करता था। उसकी पत्नी कमल के समान मुख वाली और सती साध्वी थी। एक समय भद्रशिला नदी के तट पर उन दोनो ने श्री सत्य नारायण स्वामी का व्रत किया। उसी समय में वहां एक साधू वैश्य आया। उसके पास व्यापार के लिये बहुत सा धन था। नाव को किनारे पर ठहरा कर राजा के पास गया और राजा को व्रत करते हुवे देख कर विनय के साथ पूछा कि हे राजन, भक्ति युक्त चित से आप क्या कर रहे हैं। मेरी भी सुनने की इच्छा है। यह आप मुझे बतायें।राजा बोलाः- हे साधु अपने बंधुओं के साथ पुत्र आदि की प्राप्ति के लिये महा शक्तिवान श्री सत्य नारायण स्वामी का व्रत तथा पूजन किया जा रहा है। राजा के वचन सुनकर साधु आदर के साथ बोला, हे राजन मुझसे इसका सब विधान कहिये। मैं भी आपके कथनानुसार इस व्रत को करूंगा। मेरी भी कोई संतान नहीं है और इस से निश्चय ही होगी। राजा से सब विधान सुनकर व्यापार से

निवृत होकर आनन्द के साथ घर गया। साधु ने अपनी पत्नी को संतान देने वाले व्रत का समाचार सुनाया और कहा कि यदि मेरी संतान होगी तो मैं भी इस व्रत को करूंगा। साधू ने ऐसे वचन अपनी पत्नी लीलावती से कहे। कुछ समय बाद लीलावती गर्भवती हुवी तथा दसवें महीने में एक सुन्दर कन्या का जन्म हुआ जिसका नाम कलावती रख्खा गया। तब लीलावती ने मीठे शब्दों में अपने पती से कहा कि आपने जो संकल्प किया था कि भगवान का व्रत करूंगा अब आप उसे करिये। साधू बोला हे प्रिये इसके विवाह पर करूंगा। अपनी पत्नी को आश्वासन देकर वह नगर को गया। कलावती पित्रृ गृह में वृद्धि को प्राप्त हो गई। साधू ने जब नगर में सखियों के साथ अपनी पुत्री को देखा तब तुरन्त ही दूत को बुलाकर कहा कि पुत्री के लिये कोई सुयोग्य वर देख कर लावो। साधू की आज्ञा पाकर दूत कंचनपुर नगर पहुंचा और वहां पर बड़ी खोज कर लड़की के लिये सुयोग्य वणिक पुत्र को ले आया। उस सुयोग्य वर को देख कर साधू ने अपने भाई बंधुओं सहित अपनी पुत्री का विवाह उस के साथ कर दिया। किन्तु दुर्भाग्य से विवाह के समय भी वह व्रत को करना भूल गया। तब भगवान क्रोधित हो गये और उसे श्राप दिया कि उसे दारुण दुःख प्राप्त होगा। अपने काम में कुशल साधू बनिया अपने जमाता सहित समुद्र के समीप रत्नपुर नगर पहुंचा और वहां दोनो ससुर जमाई चन्द्रकेतु राजा के नगर में व्यापार करने लगे। एक रोज भगवान सत्यनारायण की माया से प्रेरित कोई चोर राजा का धन चुरा कर जा रहा था किन्तु पीछे से राजा के दूतों को आते देख कर चोर

ने धबरा कर भागते भागते धन वहीं चुप चाप रख दिया जहां वे दोनो ससुर जमाई ठेहरे हुये थे। दूतों ने उस साधू वैश्य के पास राजा के धन को देख कर दोनो को बांध लिया और प्रसन्नता से दौड़ते हुवे राजा के समीप जाकर बोले - ये दो चोर हम पकड़ कर लाये हैं। देख कर आज्ञा दें। राजा की आज्ञा से उनको कठिन कारावास में डाल दिया गया और उनका धन राजा ने छीन लिया। उसी श्राप से उसकी पत्नी भी घर पर बहुत दुखी हुवी और घर पर जो धन रख्खा था उसे चोर चुरा कर ले गये। शारीरिक व मानसिक पीड़ा में भूख और प्यास से अति दुखित हो अन्न की चिंता में कलावती एक ब्राह्मण के घर गई। वहां उसने

श्री सत्यनारायण स्वामी का व्रत होते देखा। उसने कथा सुनी और प्रसाद लेकर रात को घर आई। माता ने कलावती से कहा - हे पुत्री दिन में कहां रही। तेरे मन में क्या है। कलावती बोलीः- हे माता मैं ने एक ब्राह्मण के घर श्री सत्य नारायण स्वामी का व्रत होते देखा। कन्या का वचन सुनकर लीलावती श्री सत्य नारायण के पूजन की तैयारी करने लगी। लीलावती ने परिवार और बान्धुओं सहित भगवान का पूजन किया और यह वर मांगा कि मेरे पति और दामाद शीघ्र ही घर आ जावें और प्रार्थना की कि हम सब का अपराध क्षमा करो। श्री सत्य नारायण भगवान इस व्रत से संतुष्ठ हो गये और राजा चन्द्रकेतु को स्वप्न में दिखाई दिये और कहा - कि हे राजन दोनो बंदी बनियों को सुबह ही छोड़ दो और उनका सब धन जो तुमने ग्रहण किया है उसे दे दो। नहीं तो तेरा धन,

राज्य, पुत्रादि सब नष्ट कर दूंगा। राजा को ऐसा वचन सुनाकर भगवान अन्तर्ध्यान हो गये। सुबह होते ही राजा चन्द्रकेतु ने सभा में अपना स्वप्न सुनाया और दोनो वणिक पुत्रों को कैद से मुक्त कर सभा में बुलाया। दोनो ने आते ही राजा को नमस्कार किया। राजा मीठी वाणी में बोला हे महानुभावों भाग्यवश ऐसा कठिन दुख प्राप्त हुवा है। अब कोई भय नहीं है ऐसा कह कर राजा ने उनको नये नये वस्त्र आभूषण पहनाये तथा उनका जितना धन लिया था उस से दूना धन दिलवाकर विदा किया। दोनो वैश्य अपने घर को चल दिये।

श्री सत्यनारायण व्रत कथा का तीसरा अध्याय समाप्त।

॥ चौथा अध्याय।

सूतजी बोलेः- वैश्य ने मंगलाचरण करके यात्रा आरम्भ की और अपने नगर को चला। वैश्य के थोड़ी दूर पहुंचने पर दण्डी वेश धारी सत्यनारायण भगवान ने वैश्य से पूछाः- हे साधू तेरी नाव में क्या है। अभिमानी वणिक हंसता हुवा बोला - हे दण्डी आप क्यों पूछते हैं। क्या धन लेने की इच्छा है। मेरी नाव में तो बेल तथा पत्ते आदि भरे हैं। वैश्य का कठोर वचन सुनकर भगवान बोले कि तुम्हारा वचन सत्य हो। ऐसा कह कर दण्डी भगवान वहां से चले गये और कुछ दूर जाकर समुद्र के किनारे बैठ गये। दण्डी के जाने पर वैश्य ने नित्य क्रिया करने के बाद नाव को ऊंची उठी देख अचम्भा किया तथा नाव में बेल पत्रादि देख कर मूर्छित हो गिर पड़ा। फिर मुर्छा खुल्ने पर बहुत शोक करने

लगा। तब उसका दामाद बोला कि आप शोक ना करें यह दण्डी का श्राप है। आप को उनकी शरण में चलना चाहिये तभी हमारी मनोकामना पूरी होगी। दामाद के वचन सुनकर वह दण्डी के पास पहुंचा। भक्ति भाव से नमस्कार कर बोला मैं ने जो आप से असत्य वचन कहे थे उस को क्षमा करो ऐसा कहकर वैश्य महान शोकातुर होकर रोने लगा। दण्डी बोलेः- हे वणिक पुत्र मेरी आज्ञा से तुम्हे बार बार दुख प्राप्त हुवा है क्यों कि तुम मेरी पूजा से विमुख हुये हो। साधू बोलाः- हे भगवान आप की माया से मोहित ज्ञानी भी आपके रुप को नहीं जानते, तब मैं अज्ञानी कैसे जान सकता हूँ। आप प्रसन्न होइये। मैं सामर्थ के अनुसार आपकी पूजा करूंगा। मेरी रक्षा करो और पहले के समान मेरी नाव को धन से भर दो। उन दोनो के भक्ति युक्त वचन सुन कर दण्डी प्रसन्न हो गये। उसकी इच्छा अनुसार वर देकर अन्तर्ध्यान हो गये। तब उन्हो ने नाव पर आ कर देखा कि नाव धन से परिपूर्ण है। फिर वह सत्यनारायण का पूजन कर साथियों सहित अपने नगर को चल दिये। जब वह अपने नगर के निकट पहुंचा तब दूत को अपने घर भेजा। दूत ने साधू के घर जाकर उसकी स्त्री को नमस्कार कर के कहा कि साधू अपने दामाद के सहित इस नगर के पास आ पहुंचे है। ऐसा वचन सुनकर लीलावती ने बड़े हर्ष के साथ भगवान का पूजन कर पुत्री से कहा कि मैं अपने पति के दर्शन को जाती हूँ , तुम कार्य पूर्ण करके शीघ्र आना। माता के वचन सुनकर कलावती प्रसाद छोड़कर पति के पास गई। प्रसाद की अवज्ञा के कारण भगवान ने रुष्ठ होकर उसके पति को नाव सहित

पानी में डुबा दिया। कलावती अपने पति को ना देख कर रोती हुवी जमीन पर गिर पड़ी। इस तरह नाव को डूबा हुवा तथा कन्या को रोता हुवा देख कर साधू दुखित होकर बोला। हे प्रभू मुझसे या मेरे परिवार से जो भूल हुवी उसे क्षमा करें। उसके दीन वचन सुनकर सत्यनारायण प्रसन्न हो गये और आकाशवाणी हुवी - हे साधू तेरी कन्या मेरे प्रसाद को छोड़ कर आई है इस लिये इसका पति अदृष्य हो गया है। यदि वह घर जाकर प्रसाद खाकर लौटे तो इसे पती अवष्य मिलेगा। आकाशवाणी से ऐसा सुनकर कलावती ने घर पहुंचकर प्रसाद खाया। लौटने पर उस ने पती के दर्शन किये। तब वैश्य परिवार के सब लोग प्रसन्न हुवे। फिर साधू ने बन्धुओं सहित भगवान सत्यनारायण का विधि पूर्वक पूजन किया। उस दिन से हर पूर्णिमा व संक्रान्ति को भगवान सत्यनारायण का पूजन करने लगा। फिर इस लोक का सुख भोग कर स्वर्ग को चाला गया।

श्री सत्यनारायण व्रत कथा का चर्तुथ अध्याय समाप्त।

॥ पांचवा अध्याय ॥

सूतजी बोले : - हे ऋषियों मैं और भी कथा कहता हूँ सुनो। प्रजा पालन में लीन तुंगध्वज नाम का एक राजा था। उसने भी भगवान का प्रसाद त्याग कर बहुत दुख पाया। एक समय वन में जा कर के पशुवों को मार कर बट वृक्ष के नीचे आया। उस ने भक्ति भाव से ग्वालों को बन्धुओं सहित भगवान सत्यनारायण का पूजन करते देखा। राजा देख कर भी अभिमान वश न तो वहां गया और ना ही नमस्कार किया। जब ग्वालों ने उस के सामने भगवान का प्रसाद रख्खा

तो वह प्रसाद को त्याग कर अपनी सुन्दर नगरी को चल पड़ा। वहां उस ने अपना सब कुछ नष्ट पाया। तो वह समझ गया कि यह सब उस प्रसाद के निरादर करने से हुवा है। तब वह विश्वास कर ग्वालों के समीप गया और विधि पूर्वक पूजन कर प्रसाद खाया। भगवान सत्य नारायण की कृपा से सब जैसा था वैसा ही हो गया तथा सुख भोग कर मरने के बाद स्वर्ग लोक को गया। जो मनुष्य इस परम दुर्लभ व्रत को करेगा भगवान की कृपा से उसे धन धान्य की प्राप्ति होगी। निर्धन धनी होता है बन्दी बन्धन से मुक्त होकर निर्भय हो जाता है। संतान हीन को संतान प्राप्त होती है। सब मनोरथ पूर्ण होकर अन्त में वैकुंठ धाम को जाता है।

जिन्होने पहले इस व्रत को किया है उनके दूसरे जन्म की कथा कहता हूँ। वृद्ध शतानन्द ब्राह्मण ने सुदामा का जन्म लेकर, श्री कृष्ण जी की भक्ति कर के मोक्ष पाया।

लकड़ हारा त्रेता युग मे भक्त राज निषाद बना एवं भगवान राम से मित्रता कर मुक्ती को प्राप्त हुआ। उल्कामुख नाम का राजा सूर्य वंश में जनम लेकार भगवान श्री राम के पिता, दशरथ होकर वैकुण्ठ को प्राप्त हुवे। साधू वनिया ने मोरध्वज बनकर अपने पुत्र को घर आये अतिथि की सेवा में आरे से काट कर मोक्ष प्राप्त किया। राजा तुंगध्वज ने स्वयंभू मनु होकर भगवान की भक्ति युक्त कर्म कर के मोक्ष को प्राप्त किया।

श्री सत्यनारायण व्रत कथा का पंचम् अध्याय समाप्त।

Shri Satya Narayanaay Namah.

May you all attain purity of heart through constant selfless service? May you all shine as dynamic Karma Yogins radiating joy, peace and bliss every where. May you all rejoice in the welfare of all beings. May your minds be fixed in the Lord while your hands are in the service of humanity. May you all understand the principles and techniques of Karma Yoga. May all your actions become offerings unto the Lord. May you all attain *Kaivalya Moksha* through the practice of Karma Yoga in this very birth.

OM SHANTI, SHANTI, SHANTIH.

॥ अथ कुश काण्डिका करण ॥

स्रुव पूजनम् - स्रुवका पूजन कर के सब सामग्री चढावे और हाथ जोडे।

ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमम्पुरस्ताव्दिसीमतः सुरचो व्वेन आवः।
सबुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनि मसतश्च विव्वः॥

नये काँसे के पात्र में अग्नि लाकर अपने पास रखें।

नूतन कांस्यपात्रेण अग्निमानीय स्वाभिमुखं निदध्यात्।

अग्नि जला कर उसका आवाहन करें तथा निम्न मन्त्र से अग्नि की प्रार्थना करें।

ॐ उद्बुध्य स्वाग्ने प्रति जाग्रहि त्वमिष्टा पूर्ते स ꣳ सृजेथामयं च।
अस्मिन्त् सधस्थे अध्युत्त रस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत॥
मुखं समस्त देवानां खांडवोद्यान दाहकम्।

पूजितं सर्व यज्ञेषु अग्नि मावाहयाम्यहम् ॥

अग्नये नमः, आवाहयामि, पूजयामि, नमस्करोमि च ॥

कर्पूर जला कर निम्न मन्त्र से अग्नि प्रज्वलित करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः। ॐ भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना, पृथिवीव वरिम्णा।
तस्यास्ते पृथिवि देव यजनि, पृष्ठे ऽग्नि मन्नादमन्ना द्यायादधे ॥

अग्नये नमः, आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि, ध्यायामि च ॥

हाथ जोड कर अग्नि का पूजन करें।

ॐ अग्नि दूतं पुरोदधे हव्यावाह मुपब्रुवे। देवाँ आसादयादिह ॥

एक एक समिधा को बीच में पकड़ कर दोनो ओर धी में डुबो कर निम्न मन्त्रों से तीन समिधायें दें।

॥ १ ॥ ॐ अयन्त इध्म आत्मा, जात वेदस्तेने ध्यस्व वर्धस्व।
चेद्धवर्धय चास्मान् प्रजया, पशुभिर्ब्रह्म वर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा ॥
इदं अग्नये जातवेदसे इदं न मम् ॥

॥ २ ॥ ॐ समिधाऽग्निं दुवस्यत, घृतैर्बोधयता तिथिम् । आस्मिन् हव्या
जुहोतन ॥ ॐ सु समिद्धाय शोचिषे, धृतं तीव्रं जुहोतन। अग्नये
जातवेदसे स्वाहा ॥ *इदं अग्नये जातवेदसे इदं न मम् ॥*

॥ ३ ॥ ॐ तन्त्वा समिद्भिरंगिरो, घृतेन वर्द्धयामसि। बृहच्छोचा यविष्ठय
स्वाहा ॥ *इदं अग्नये आंगिरसे इदं न मम्।*

हवन कुण्ड के चारो ओर जल प्रोक्षण करें ।

ॐ अदिते ऽनुमन्यस्व ॥ *पूर्व में ।*

ॐ अनुमते ऽनुमन्यस्व ॥ *पश्चिम में ।*

ॐ सरस्वत्य ऽनुमन्यस्व ॥ *उत्तर में ।*

ॐ देव सवितः प्रसुव यज्ञं, प्रसुव यज्ञ पतिं भगाय । दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः , पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु ॥ *चारो ओर ।*

निम्न मन्त्रों से धृत की आहुतियां दें । बचे हुवे धी को प्रोक्षणी पात्र में डालें ।

१ । ॐ प्रजापतये स्वाहा ।	इदं प्रजापतये इदं न मम ।
२ । ॐ इन्द्राय स्वाहा ।	इदं इन्द्राय इदं न मम ।
३ । ॐ अग्नये स्वाहा ।	इदं अग्नये इदं न मम ।
४ । ॐ सोमाय स्वाहा ।	इदं सोमाय इदं न मम
५ । ॐ भूः स्वाहा ।	इदं अग्नये इदं न मम ।
६ । ॐ भूवः स्वाहा ।	इदं वायवे इदं न मम ।
७ । ॐ स्वः स्वाहा ।	इदं सूर्याय इदं न मम ।

सामग्री की आहुतियां डालें - साथ मे धी की आहुतियां देते रहें ।

१ । ॐ गणानां त्वा गणपति ꣳ हवा महे, प्रियाणां त्वा प्रियपति ꣳ हवा महे । निधीनां त्वा निधिपति ꣳ हवामहे, वसो मम ।

आहमजानि गर्भधमा, त्वमजासि गर्भधम्॥ *ॐ गणाधिपतये स्वाहा॥*

२। सर्व मंगल मांगल्ये, शिवे सर्वार्थ साधिके। शरण्ये त्र्यम्बिके गौरि, नारायणि नमोऽस्तु ते॥ *ॐ गौर्यै स्वाहा॥*

३। ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा बन्द मानस्तदा, शास्ते यजमानो हविर्भिः।

अहेड़मानो वरुणेह वोध्युरूश ꣳ, स मा न आयुः प्र मोषीः॥

ॐ वरुणाय स्वाहा॥

४। ॐ गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया। देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोक मातरः। धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिरात्मनः कुलदेवता। *ॐ शोडषमात्रिकाभ्यो स्वाहा॥*

<u>सूर्य – रवी (SUN)</u>

ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्न मृतं मर्त्यञ्च।

हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सूर्याय स्वाहा॥

<u>चन्द्र (MOON)</u>

ॐ इमं देवा असपत्न ꣳ सुवध्वं महते क्षत्राय महते जेष्ठ्याय महते जानराज्याय इन्द्रस्येन्द्रियाय। इममुष्य पुत्र ममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष

वोऽमी, राजा सोमो ऽस्माकं ब्राह्मणाना ꣳ राजा ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सोमाय स्वाहा ॥

मंगल (MARS)

ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपा ꣳ रेता ꣳ सि जिन्वति ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भौमाय स्वाहा ॥

बुध (MERCURY)

ॐ उद्बुध्य स्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टा पूर्ते स ꣳ सृजेथामयं च। अस्मिन्त् सधस्थे अध्युत्त रस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः बुधाय स्वाहा ॥

बृहस्पति (JUPITER)

ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद् द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋृत प्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्।

ॐ भूर्भुवः स्वः बृहस्पतये स्वाहा ॥

शुक्र (VENUS)(East)

ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ꣳ शुक्र मन्धस इन्द्रस्येन्द्रिय मिदं पयो ऽमृतं मधु ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः शुक्राय स्वाहा ॥

शनि (SATURN)

ॐ शंनो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि श्रवन्तु नः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः शनैश्चराय स्वाहा॥

राहु (RAHU)

ॐ कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधाः सखा। कया शचिष्ठया वृता॥

ॐ भूर्भुवः स्वः राहवे स्वाहा॥

केतु (KETU)

ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशो मर्या अपेश से। समुषद्भिरजायथाः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः केतवे स्वाहा ॥

इदं नवग्रह देवताभ्यो इदं न मम्॥

अधि देवता –

ॐ त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं। उर्वा रुकमिव बन्धनान्

मृत्योर्मुक्षिय माऽमृतात्॥

ईश्वराय स्वाहा।	उमाय स्वाहा।	स्कन्दाय स्वाहा।
विष्णवे स्वाहा।	ब्रह्मणे स्वाहा।	इन्द्राय स्वाहा।
यमाय स्वाहा।	कालाय स्वाहा।	चित्रगुप्ताय स्वाहा॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अधि देवताभ्यो स्वाहा॥ इदं अधि देवताभ्यो इदं न मम्॥

अनेन होमेन अधि देवताः प्रीयन्तां न ममेति जलम् उत्सृजेत्॥

प्रत्यधि देवता –

ॐ अग्ने नय सुपथाराये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नम उक्तिं विधेम स्वाहा।

अग्नये स्वाहा। अद्भ्यो स्वाहा। पृथिव्यै स्वाहा।

विष्णवे स्वाहा। इन्द्राय स्वाहा। इन्द्राण्यै स्वाहा।

प्रजापतये स्वाहा। सर्पेभ्यः स्वाहा। ब्रह्मणेभ्यो स्वाहा॥

ॐ भूर्भुवः स्वः प्रत्यधि देवताभ्यो स्वाहा॥ इदं प्रत्यधि देवताभ्यो इदं न मम्॥

अनेन होमेन प्रत्यधि देवताः प्रीयन्तां न ममेति जलम् उत्सृजेत्॥

पञ्च लोकपाल –

नमो गणेभ्यो गणपति भ्यश्चवो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्चवो नमो नमो ग्रित्सेभ्यो ग्रित्सपति भ्यश्चवो नमो नमो विरुपेभ्यो विश्वरुपेभ्यश्चवो नमो नमः ॥

१- गणपतये स्वाहा। २- दुर्गायै स्वाहा। ३-वायवे स्वाहा।

४-आकाशाय स्वाहा। ५- शिवाय स्वाहा।

ॐ भूर्भुवः स्वः पञ्चलोकपाल देवताभ्यो स्वाहा॥

इदं पञ्चलोकपाल देवताभ्यो इदं न मम्

अनेन होमेन पञ्चलोकपाल देवताः प्रीयन्तां न ममेति जलम् उत्सृजेत्॥

दश दिग्पाल –

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ꣳ हवे हवे सुहव ꣳ शूरमिन्द्रं ह्वयामि-शक्रम्पुरुहूतमिन्द्र ꣳ स्वस्ति नो मघबा धात्विन्द्रः स्वाहा॥

१-इन्द्राय स्वाहा। २-अग्नये स्वाहा। ३-यमाय स्वाहा।

४-निर्ऋतये स्वाहा। ५-वरुणाय स्वाहा। ६-वायवे स्वाहा।

७-आकाशाय स्वाहा। ८-ईशानाय स्वाहा। ९-ब्रह्मणे स्वाहा।

१०-अनन्ताय स्वाहा॥ *ॐ भूर्भुवः स्वः दशादिकपाल देवताभ्यो स्वाहा॥*

इदं दशादिकपाल देवताभ्यो इदं न मम्॥

अनेन होमेन दशादिकपाल देवताः प्रीयन्तां न ममेति जलम् उत्सृजेत्॥

॥ क्षेत्रपाल देवता॥

ॐ भ्राजच्चन्द्र जटाधरं त्रिनयनं नीलां जनाद्रिप्रभं।

दोर्दण्डान्त गदा कपाल मरुणं स्रग्गन्ध वस्त्रावृतम्॥

घण्टा धुर्धुरु मेखलाध्वनि लसज्झंकार भीमं विभुं।

वन्दे संहित सर्प कुण्डलधरं श्री क्षेत्रपालं सदा॥

ॐ भूर्भुवः स्वः क्षेत्रपाल देवताभ्यो स्वाहा॥ इदं क्षेत्रपाल देवताभ्यो इदं न मम्॥

अनेन होमेन क्षेत्रपाल देवताः प्रीयन्तां न ममेति जलम् उत्सृजेत्॥

॥ वास्तु देवता॥

ॐ वास्तोष्पते प्रति जानीह्यस्मान्त्स्वावेशो ऽअनमीवो भवोः नः

यस्त्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदेशञ्च तुष्पदे।

ॐ भूर्भुवः स्वः वास्तु पुरुषाय स्वाहा॥ इदं वास्तोष्पतये इदं न मम॥

अनेन होमेन वास्तुपुरुष देवताः प्रीयन्तां न ममेति जलम् उत्सृजेत्॥

॥ ब्रह्मा॥

ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः। सुरुचो वेन आवः

सबुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनि मसतश्च विवः स्वाहा ॥

श्री ब्रह्मणे स्वाहा ॥ ॥

ॐ चतुर्मुखाय विद्महे हंसरूढ़ाय धीमहि तन्नो ब्रह्मा प्रचोदयात् ॥

॥ विष्णु ॥

ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णो स्यूरसि विष्णो ध्रुवोऽसि वैष्णवमसि विष्णवे त्वा स्वाहा ॥ *श्री विष्णवे स्वाहा ॥*

ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि तन्नो विष्णुः प्रचोदयात् ॥

॥ महेश ॥

ॐ नमः शंभवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च स्वाहा । *श्री रुद्राय स्वाहा ॥*

ॐ तत् पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥

॥ अम्बिका ॥

ॐ अम्बे अम्बिके अम्बालिके न मा नयति कश्चन । ससस्त्य श्वकः सुभद्रिकां काम्पील वासिनीम् ॥ श्री अम्बिकाय स्वाहा ॥

॥ नवदुर्गा ॥

ॐ जयंती मंङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी । दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते ॥ श्री नव दुर्गाय स्वाहा ॥

यथाः-

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय स्वाहा।

ॐ नमो भगवते नारायणाय स्वाहा।

ॐ नमो भगवते रामचन्द्राय स्वाहा।

ॐ नमो भगवते वायुनन्दनाय स्वाहा

अथवाः-

ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमही तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्।

ॐ महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णु प्रियायै धीमहि तन्नो लक्ष्मिः

प्रचोदयात्॥

(प्रधान देवता के लिये वैदिक मन्त्र से अथवा बीज मन्त्र या १०८ नामों से आहुतियां दें॥)

॥ विविध गायत्री मन्त्र ॥

॥ गणेश ॥	ॐ एक दन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो दन्तिः प्रचोदयात्॥
॥ शिव ॥	ॐ तत् पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्॥
॥ नारायण ॥	ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्॥
॥ लक्षमी ॥	ॐ महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णु प्रियायै धीमहि तन्नो लक्ष्मिः प्रचोदयात्॥
॥ ब्रह्मा ॥	ॐ चतुर्मुखाय विद्महे हंसरूढाय धीमहि तन्नो ब्रह्मा प्रचोदयात्॥
॥ सरसवती ॥	ॐ सरस्वत्यै च विद्महे ब्रह्म पुत्र्यै च धीमहि तन्नः वणीः प्रचोदयात्॥
॥ राम ॥	ॐ दाशरथाय विद्महे सीता वल्लभाय धीमहि तन्नो रामः प्रचोदयात्॥

॥ सीता ॥ ॐ जनकनन्दिन्यै विद्महे भूमिजायै च धीमहि तन्नः सीता प्रचोदयात्॥

॥ लक्ष्मन ॥ ॐ दाशरथाय विद्महे उर्मिला प्रियायै धीमहि तन्नो लक्ष्मणः प्रचोदयात्॥

॥ हनुमान ॥ ॐ आञ्जनेयाय विद्महे महाबलाय धीमहि तन्नो हनुमत् प्रचोदयात्॥

॥ कृष्ण ॥ ॐ देवकीनन्दनाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि तन्नः कृष्णः प्रचोदयात्॥

॥ राधा ॥ ॐ वृषभानुजाय विद्महे कृष्ण प्रियायै धीमहि तन्नो राधा प्रचोदयात्॥

॥ तुलसी ॥ ॐ तुलस्यै च विद्महे विष्णु प्रियायै धीमहि तन्नो वृन्दा प्रचोदयात्॥

॥ अग्नि ॥ ॐ महाज्वालाय विद्महे अग्निदेवाय धीमहि तन्नो ऽग्निः प्रचोदयात्॥

॥ इन्द्र ॥ ॐ सहस्त्र नेत्राय विद्महे वज्रहस्ताय धीमहि तन्नः इन्द्रः प्रचोदयात्॥

॥ यम ॥ ॐ सूर्यपुत्राय विद्महे महाकालाय धीमहि तन्नो यमः प्रचोदयात्॥

॥ वरुण ॥ ॐ जलविम्बाय विद्महे नील पुरूषाय धीमहि तन्नो वरुणः प्रचोदयात्॥

॥ पृथ्वी ॥ ॐ पृथ्वीदेव्यै च विद्महे सहस्त्र मूर्तयै धीमहि तन्नः पृथ्वी प्रचोदयात्॥

॥ गुरु ॥ ॐ गुरु देवाय विद्महे पर ब्रह्मणे च धीमहि तन्नो गुरुः प्रचोदयात्॥

॥ ब्रह्म ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्॥

॥ हंस ॥ ॐ परमहंसाय विद्महे महाहंसाय धीमहि तन्नो हंसः प्रचोदयात्॥

॥ गौरी ॥ ॐ गिरिजायै विद्महे शिव प्रियायै धीमहि तन्नो गौरीः प्रचोदयात्॥

॥ दुर्गा ॥ ॐ कात्यायनाय विद्महे कन्याकुमारि धीमहि तन्नो दुर्गो प्रचोदयात्॥

॥ सूर्य ॥ ॐ भास्कराय विद्महे दिवाकराय धीमहि तन्नः आदित्यः प्रचोदयात्॥

॥ चन्द्र ॥ ॐ निशाकराय विद्महे कालनाथाय धीमहि तन्नः सोमः प्रचोदयात्॥

॥ मंगल ॥ ॐ अंगारकाय विद्महे भूमिपालाय धीमहि तन्नः कुजः प्रचोदयात्॥

॥ बुद्ध ॥ ॐ चन्द्र पुत्राय विद्महे रोहिणी प्रियाय धीमहि तन्नः बुधः प्रचोदयात्॥

॥ गुरु ॥ ॐ सुराचार्याय विद्महे सुर श्रेष्ठाय धीमहि तन्नः गुरुः प्रचोदयात्॥

॥ शुक्र ॥ ॐ रजदबाय विद्महे भृगु सुताय धीमहि तन्नः शुक्रः प्रचोदयात्॥

॥ शनि ॥ ॐ सनैश्चराय विद्महे सूर्य पुत्राय धीमहि तन्नः मण्डाः प्रचोदयात्॥

॥ राहु ॥ ॐ सूकदन्ताय विद्महे उग्र रूपाय धीमहि तन्नः राहुः प्रचोदयात्॥

॥ केतु ॥ ॐ चित्रवर्णाय विद्महे सर्प रूपाय धीमहि तन्नः केतुः प्रचोदयात्॥

॥ स्विष्ट कृत आहुति ॥

यह प्रायश्चित् आहुति भी कहलाती है। मिष्ठान्न आदि को पान के पत्ते में रखकर यह आहुति करनी चाहिये॥

ॐ यदस्य कर्मणो ऽत्यरीरिचं, यद्वान्यून मिहाकरम्। अग्निष्टत् स्विष्टकृद् विद्यात्सर्व, स्विष्टं सुहुतं करोतु मे। अग्नये स्विष्ट कृते सुहुतहुते, सर्व प्रायश्चित् आहुतिनां। कामानां समर्द्धयित्रे सर्वान्नः, कामान्त्समर्द्धय स्वाहा। इदं अग्नये स्विष्ट कृते इदं न मम॥

॥ प्रायश्चित् आहुति ॥ नवाज्याहुतयः ॥

इन मन्त्रों से घी की आहुति दें - बचे हुवे घी को प्रोक्षणी पात्र में डालें।

(1) ॐ भूः स्वाहा। *इदं अग्नये इदं न मम ॥*

(2) ॐ भुवः स्वाहा। *इदं वायवे इदं न मम ॥*

(3) ॐ स्वः स्वाहा। *इदं सूर्याय इदं न मम ॥*

(4) ॐ प्रजापतये स्वाहा। *इदं प्रजापतये इदं न मम ॥*

(5) ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान्, देवस्य हेडो अवियासि सीष्ठाः।
यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषा ꣳ सि प्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा ॥
इदं अग्नि वरुणाभ्यां इदं न मम ॥

(6) ॐ सत्वन्नो अग्नेवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ।
अवयक्ष्वनो वरुणं रराणो वीहि मड़ीकं सुहवो न एधि स्वाहा ॥
इदं अग्नि वरुणाभ्यां इदं न मम ॥

(7) ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभि शस्तिपाश्च सत्य मित्वमयासि।
अया नो यज्ञं वहास्य यानो धेहि भेषज ꣳ स्वाहा ॥
इदं अग्नये अयसे च इदं न मम ॥

(8) ॐ ये ते शतं वरुणये सहस्त्रं यज्ञियाः पाशा विततता महान्तः।
तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा ॥
इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः च इदं न मम ॥

(9) ॐ उदुत्तमं वरुण पाश मस्मदवाधमं विमध्यमं श्रथाय।
अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा ॥
इदं वरुणायादित्यायादितये च इदं न मम ॥

॥ पूर्णाहुति ॥

सुपारी अथवा नारियल पीला सूत और सामग्री लेकर खड़े हो कर पूर्णाहुति करें।

ॐ पूर्णमदः पुर्णमिदं पुर्णात्पूर्ण मुदच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवा वशिष्यते। स्वाहा॥

निम्न मन्त्र से बची हुवी सामग्री को तीन भाग में कर के प्रत्येक भाग को अग्नि मे छोड़ें।

ॐ सर्वं वै पूर्ण ꣳ स्वाहा॥ ॐ सर्वं वै पूर्ण ꣳ स्वाहा॥

ॐ सर्वं वै पूर्ण ꣳ स्वाहा॥

बचे हुवे धी को एक धार से हवन कुण्ड में छोड़ें ।

ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्र मसि सहस्त्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः स्वाहा॥ इदं वाजादिभ्यो, अग्नये, विष्णवे, रुद्राय, सोमाय, वैश्वान्नराय च, इदं न मम॥

निम्न मन्त्र से यजमानों के उपर जल छिड़कें।

यथा बाण प्रहाराणां कवचं वारकं भवेत।

तद्वत्दैवोप धातानां शान्तिर्भवतु वारिका॥

प्रोक्षणी के जल से दोनो हाथों को मन्जन कर आँख चेहरे तथा पूरे शरीर पर लगायें।

१। ॐ तेजोऽसि तेजो मयि देहि। २। ॐ वीर्यऽसि वीर्य मयि देहि।

३। ॐ बलंऽसि बलं मयि देहि। ४। ॐ ओजोऽसि ओजो मयि देहि।

५। ॐ मन्युंऽसि मन्युं मयि देहि। ६। ॐ सहोऽसि सहो मयि देहि।

॥ भस्म धारणं त्र्यायुष करणं च ॥

कुण्ड के ऐशान्य कोण (N. E) से स्रुवा के अग्रभाग से शिर कण्ठ बाहु एवं हृदय पर लगायें।

ॐ जमदग्नेः त्र्यायुषं। इति ललाटे॥ *माथे पर लगायें।*

ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषं। इति ग्रीवायाम्॥ *गले पर लगायें।*

ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषं। इति दक्षिण बाहुमूले॥ *दांये हाथ के मूल पर लगायें।* ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषं। इति हृदये॥ *हृदय पर लगायें।*

श्री सत्य नारायणाय नमः। कर्पूर आरार्तिक्यं समर्पयामि।

PUSHPANJALI / KSHAMAA YAACHNAA

KARPURA GAURAM KARUNA AVATAARAM

SANSAARA SAARAM BHUJAGENDRA HAARAM

SADAA VASANTAM HRIDAYAARAVINDE

BHAVAM BHAVAANI SAHITAM NAMAAMI

Meaning: *I bow to that camphor-hued, white complexioned (Lord Shiva),Who is Incarnation of compassion, Who is the very essence of (consciousness; the Knowing principle) of life (of the embodied soul); Who wears snakes as garlands, Whose eternal abode is in the heart of the devotee, I bow to Lord Shiva and His Beloved, Devi Bhavani!*

त्वमेव माता च पिता त्वमेव। त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।

त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव। त्वमेव सर्वं मम देव-देव॥

TWAMEVA MAATAA CHA PITAA TWAMEVA

TWAMEVA BANDHUH CHA SAKHAA TWAMEVA

TWAMEVA VIDYAA DRAVINAM TWAMEVA

TWAMEVA SARVAM MAM DEVA DEVA

Meaning: *O Universal Being, You are my Mother, my Father, my Brother and my Friend. You are my knowledge and my only wealth. You are everything to me and the God of all Gods.*

अन्यथा शरणं नास्ति, त्वमेव शरणं मम ।

तस्मात् कारूण्य भावेन, रक्ष मां परमेश्वर ॥

ANYATHAA SHARANAM NAASTI, TWAMEVA SHARANAM MAMA

TASMAAT KAARUNYA BHAAVENA, RAKSHA MAM PARAMESHWARA.

Meaning: *There is no other refuge for me, except You; therefore, O Lord with compassion, protect me.*

यानि कानि च पापानि जनमान्तर कृतानि च ।

तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिणां पदे पदे ।

YAANI KAANI CHA PAA-PAANI, JANMANTARA KRITAANI CHA

TAANI TAANI VINASHYANTI, PRADAKSHINAM PADE PADE

Meaning: *By the circumambulation infront of Lord, all the sins that one may have committed are destroyed at every step, even the sin accumulated over the past lives.*

कायेन वाचा मनसेन्द्रि यैर्वा, बुद्ध्यात्म नावा प्रकृतेः स्वभावात् ।

करोमि यद् यत् सकलं परस्मै, नारायणायेति समर्पयामी ॥

सदा शिवायेति समर्पयामि ॥ जगदम्बिकायेति समर्पयामि

KAAYENA VAACHAA MANASENDRIYAIRVAA
BUDHYATMANAA VAA PRAKRITER SWABHAAVAAT
KAROMI YAD YAD SAKALAM PARASMAI
NARAYNAAYETI SAMARPAYAAMI,
SADAA SHIVAAYETI SAMARPAYAAMI,
JAGADAMBIKAAYETI SAMARPAYAAMI.

Meaning: *Whatever I do with my mind, body, speech or with other senses of my body, or with my intellect or with my innate natural tendencies, I offer everything to Narayana, I offer everything to Lord Shiva, I offer every thing to Ma Shakti.*

नाना सुगन्धि पुष्पाणि, यथा कालोद् भवानि च।

पुष्पाञ्जलिः मया दत्तः, गृहाण परमेश्वर॥

NAANAA SUGANDHI PUSHPAANI YATHAA KAALOD BHAVAANI CHA PUSHPAANJALIR MAYAA DATA GRIHAN PARAMESHWAR.

Meaning: *I have prepared this collection of fragrant flowers by procuring from seasonal plants. O Lord Paramsewara kindly accept my offering of these flowers.*

ॐ असतो मा सद् गमय। तमसो मा ज्योर्ति गमय।

मृत्यों मा अमृतं गमय॥

OM, ASATO MAA SAD GAMAYA,
TAMASO MAA JYOTIR GAMAYA,
MRITYOR MAA AMRITAM GAMAYA

Meaning: *Lead me from the unreal to the real; from darkness (ignorance) to light (knowledge); and from death to immortality. Let peace be everywhere!*

ॐ पूर्णमदः पुर्णमिदं पुर्णात्पूर्ण मुदच्यते।

पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवा वशिष्यते।

OM PURNAMADH PURNAMIDAM PURNAT PURNAMUDACHYATE.

PURNASYA PURNAMAADAAY PURNAMEVA VASHISHYATE

Meaning: *That is perfect. This is perfect. Out of perfect only perfect comes. Even after taking perfect out of perfect, that is perfect which remains.*

ॐ शन्नों मित्रः शं वरुणः। शन्नों भवत्वर्य्यमा ॥

शन्नों इन्द्रो बृहस्पति। शन्नो विष्णुरुरुक्रमः ॥

नमो ब्रह्मणे नमस्ते वायो। त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि ॥

त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि। ऋतं वदिष्यामि ॥

सत्यं वदिष्यामि तन्मामवतु तद्वक्तारमवतु ॥ अवतु माम् अवतु

वक्तारम् ॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

OM SHANNO MITRAHSHAM VARUNAH, SHANNO BHAVATVARYMA,

SHANNA INDRO BRIHASPATIH, SHANNO VISHNU RURUKRAMAH

NAMO BRAHMANE, NAMASTE VAAYU, TVAMEVA PRATYAKSHAM BRAHMAYASI,

TVAAMEVA PRATYAKSHAM BRAHMA VADISHYAMI, RITAM VADISHYAMI,

SATYAM VADISHYAAMI, TANMAAMVATU, TADVAKTAARAMAVATU, AVATU MAAM, AVATU VAKTAARAM,

OM SHAANTI SHAANTI SHAANTIH.

Meaning:

O Suyra Deva (Sun), O varuna Deva (Deity of Rain), O Aryamaa (--) O Indra (Deity of Devas), O Brihaspati (Guru of the Devas),O Lord Vishnu (Deity Of Sustenance) please bestow auspiciousness on us. Salutations to Lord Brahma (Deity of Creation), Lord Vaayu (Deity of Wind), You are apparently the embodiment of Lord Brahma (Deity of Creation)! You are indeed the embodiment of Lord Brahma (Deity of Creation)! I hereby declare that you are indeed the perceptible Truth! I speak the Truth! Please understand this to be the Ultimate Truth! May you be percipient and protective of the one who is teaching you this Truth! May He protect me! May He protect the Guru!

ॐ द्यौः शान्ति रन्तरिक्ष ँ शान्तिः पृथिवी शान्ति रापः शान्ति रोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ँ शान्तिः शान्ति रेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥ ॐ शान्ति शान्ति शान्तिः ॥

OM DHYAOH SHAANTIH, ANTARIKSHA M SHAANTIH, PRITHAVI SHAANTIH, AAPAH SHAANTIH, OSHADHAYAH SHAANTIH, VANASPATAYAH SHAANTIH, VISHVEDEVAH SHAANTIH, BRAHMA SHAANTIH, SARVA M SHAANTIH, SHAANTIH EVA SHAANTIH, SAA MAA SHAANTIR-EDHI, OM SHAANTI, SHAANTI, SHAANTIH

Meaning: *Om. May there be peace in the sky and in space. May there be peace on land and in the waters. May herbs and food bring us peace. May all the personifications of The Supreme bring us peace. MayThe supreme bring us peace. May there be peace throughout the world. May the peace be pure. May The Supreme give me such peace.*

SAMARPAN

(1) KARACHARANA KRITAM VAA, KAAYAJAM KARMAJAM VAA.
SHRAVANA NAYANAJAM VAA, MAANASAM VAA PARAADHAM.
VIHITAM AVIHITAM VAA, SARVAME TAT KSHAMASVA.
JAYA JAYA KARUNAABDHE, SHRI MAHAADEVA SHAMBHO.

Meaning: *O Lord Shankar, Whose compassion is as vast as an ocean, Please forgive all the mistakes I have made, knowingly or unknowingly, by my hands, feet, body, ears, eyes, mind, or acts. Glory to You.*

(2) **SARVE BHAVANTU SUKHINAH, SARVE SANTU NIRAMAYAH.**

SARVE BHADRANI PASHYANTU, MAA KASCHID DUKHABHAAG BHAVET.

Meaning: *May all be blissful! May all enjoy health and be free from alimen! May all see the prosperity! May none of the beings created by You suffer from misery!*

(3) **ASIT GIRI SAMAMSYAT KAJJALAM SINDHU PATRE,**

SURTARUVAR SHAKHA LEKHANI PATRAMURVI

LIKHATI YADI GRIHITVA SHARDA SARVAKALAM,

TADAPI TAV GUNANAMEESH PAARAM NA YAATI.

Meaning: ***Oh Lord!*** *Even if Maa Saraswati (Deity of Knowledge) keeps on writing forever (Anant kal) on the leaves of all the trees about you and your virtues, She can not do so even with a help of a pen (kalam) made of all the mountains (solid resources) and ink (syahi) made of all sea waters(liquid reources) of this earth. Such is yourgreatness!*